



“Reality”

1. REAL AMRIT:- “अमृत हर का नाउ-देही में इस का बिस्राम !”
संसार में प्रचारित अमृत-नाम इत्यादि केवल संसारिक क्रिया मात्र है इसका परमात्मा से कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं है !
अमृत (रागमई प्रकाशित आवाज) केवल देह में ही जीव को प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से अनुभव होता है । केवल व्यर्थ का प्रलाप मात्र ही है !

2. REAL ASSET:- “ये ‘दम’ हीरा-लाल है गिन-गिन गुर (रागमई प्रकाशित आवाज) को सौंप । कहता हूँ-कहे जात हूँ-कहूँ बजावत ढोल-स्वासां बिरथा जात हैं तीन लोक का मोल !”

“प्राण-शक्ति” जैसी अनमोल-दुर्लभ पूँजी को निरन्तर खर्च करके तूने क्या कमाया ? इस जन्म में डा० की लिस्ट जो निरन्तर बढ़ ही रही है अर्थात् तेरा स्वयं का कमाया हुआ न तो तू इस जन्म में ही भोग सकता है और साथ ये जायेगा नहीं फिर अगे नाम (रागमई प्रकाशित आवाज) न बीजियो अर्थात् आगे की करंसी कमाई नहीं “भुखा” क्या खाये----?..... बेचारा ! प्रत्येक स्थान अर्थात् जून विशेष में भी तुझे बहुत-बहुत अभाव अर्थात् दुख यानी के केवल तड़पना विशेष ही पड़ेगा प्रत्येक काल विशेष स्थान इत्यादि में अनन्त काल विशेष तक.....!

3. REAL TRUTH:- आत्मा तीर्थ करे निवास ! केवल मनुष्य जन्म में स्वयं के शरीर के अन्दर “रागमई प्रकाशित आवाज” में किया गया स्नान ही सच्चा तथा मुक्ति दायक तीर्थ विशेष है । शेष सभी महान-महान तीर्थ केवल मनुष्य जन्म का निश्चित पतन मात्र है ।

4. REAL BATH:- (a) “अन्तर मेल” जे “तीर्थ” नावै-तिस वैकुण्ठ न जाणा । लोक पतीणे कछु न होवै नाही राम इआणा । “जल के मंजन जे गत होवै नित-नित मेंढक नावै-जैसे मेंढक तैसे ओही नर फिर फिर जोनी पावै ।”

(b) “अन्तर मेल” जे “कीर्तन” गवावै-तिस वैकुण्ठ न जाणा ।
लोक पतीणे कछु न होवै नाही राम इयाणा ।

OR

“अन्तर मेल” जे कथा - सत्संगी - सिख - सेवादार - पातशाह -
गुरु - संत - पैगम्बर - परमात्मा पुत्र - ब्रह्मज्ञानी - लोक सेवक
- राजनीतिक - हीरो- - - वगैरह-वगैरह कहावै - तिस वैकुण्ठ
न जाणा । लोक पतीणे कछु न होवै नाही राम इयाणा !

“अन्तर मेल” अर्थात निजी चरित्र विशेष में मर्यादा का अभाव
अथवा मनुष्य प्राणी को “पथ-भ्रष्ट” करना यानी के स्वयं की
किसी गुप्त विशेष कामना हेतू अपना अनुयायी बनाना कभी भी
तेरे लिये परोक्ष में लाभकारी साबित न हो सकेगा चालाक मूर्ख
प्राणी.....!

5.तेरी स्वयं की कमाई हुई व्यवहारिक सोच का एक ज़र्रा भी
बदलना तो दूर रहा केवल हिलाना भी घौर महा असंभव है.....!
भले ही तेरे सभी महागुरु-पीर-पैगम्बर-पातशाह-देवी-देवता
वगैरह-2 मिल कर अपनी “माँ की धुन्नी” का पूरा-भरपूर जोर
विशेष ही क्यों न लगा लें यकीन जान कुछ टस से मस भी नहीं
होने वाला ! जो बदल गया दिखता है । वो “विधी” का बहुत बड़ा
कमीना-लेकिन मीठा सा धोखा मात्र है । जिसके पास कमाई है
उसकी मांग पूरी की जाती है इसलिये उसे दल्लों की कृपा विशेष
समझा जाता है लेकिन सच जान लो कि खर्च की गई कमाई के

खत्म होते ही अनन्त काल के बाद भी वही “बदला हुआ” कार्य फिर से पहले की स्थिति में लौटेगा और प्रत्यक्ष हुये तक का समय ब्याज लगा कर के वही “विधी” आपसे बड़े भयानक तरीके विशेष से तड़पा-तड़पा कर के वसूल करेगी और आप के दलालों विशेषों का वहाँ कहीं कोई निशान भी नहीं दिखेगा ! अभी सफेद आँसू हैं तो फिर कभी यही बदल कर खून से सने होने के बावजूद भी कोई पूछने-सुनने वाला नहीं होगा ! फैसला आपका केवल निजी व्यवसाय है जो आप स्वयं को केवल अभी ही करना है अपनी जिन्दगी दल्लों के जरिये चलानी है या परमात्मा पर यकीन करना है जिसका निजी स्वरूप केवल आपका निजी चेहरा ही है जो हर वक्त मृत्यु तक आप अपने साथ ही लिये फिरते हैं लगातार तां जन्म.....!

6. समय:- समय आ गया है अब बड़े-बड़े पीर - पैगम्बर - गुरु - औलिया - पातशाह वगैरह-वगैरह का फैसला करने का जिन के नाम से मत-धर्म इत्यादि चलाये गये अथवा चलाये जा रहे हैं “परमात्मा के नाम विशेष की आड़” में ! पहले यकीनी तौर पर यह निश्चित जान लो कि परमात्मा के सिवा कोई दूसरी वस्तु है ही नहीं फिर जो कुछ भी विशेष है उसे जिस ने प्रत्यक्ष किया है तो उसी ने उसे निरन्तर धारण भी किया हुआ है फिर वही उसे एक निश्चित कानून में तकनीकी रूप से क्रियान्वित कर दायरे विशेष-विशेष में अनन्त विकल्पों विशेषों में बांध कर निर्धारित भी

रखता विशेष है फिर जीव द्वारा निरन्तर विचारिक बदलाव के कारण नवीन उत्पत्ति हेतु बीत गये को हज्म विशेष भी करता है लगातार ! इस में उसे किसी का मुँह देखने की कौन सी कल्पना आप ने संजो रखी है ये केवल तेरे और तेरे आधार में दूरी बढ़ाने का निश्चित साधन विशेष साबित होंगे “निरन्तर !” इसलिये उस तथ्य पर जितना जल्दी तुझे भरोसा होगा, तेरा मनुष्य जन्म सुरक्षित होने लगेगा की परमात्मा को कभी किसी की जरूरत नहीं होती किसी को समझाने अथवा पढ़ाने विशेष की ! तेरी स्वयं की ही कामना अथवा वासना-संसार अथवा परमात्मा की तेरी बुद्धि का फैसला करती है और विधी उसे निरन्तर तेरी सोच के अनुरूप लगातार क्रियान्वित विशेष करती रहती है और परमात्मा केवल “दृष्टा” बन कर अपनी ही सोच में अपने को अलग रख कर निरन्तर अपनी प्रत्यक्ष सोच को व्यवहारिक रूप से लगातार प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करता रहता है निरन्तर-निश्छल अपने आप में लीन प्रसन्नचित्त ! सभी “महान-महान जीव” अपनी कमाई विशेष को खर्च करते हैं अपनी ही कामनाओं विशेषों को पूरा करने हेतु “परमात्मा के नाम” की आढ़ में ! लोक-लाभ भी “महान-महान जीवों” की कामना विशेष का ही एक निश्चित लाभकारी विशेष अंग मात्र ही है “विशेष” रूप से ! सभी लोक लाभ वाले कार्य भी कलान्तर में जीव की सोच में बदलाव के कारण एकदम उल्टे अर्थ वाले मानव समाज के पतन के साधन

बन जाते हैं इसलिये विशेष बुद्धि जीवी “ऋषि” कहलाते हैं और सदा के लिये संसार त्यागी बन कर तप कमाते हैं और अगले रूहानी समर्थ मण्डलों में चले जाते हैं लेकिन मनुष्य जन्म में जीव का किस में कैसे कितना लाभ विशेष है वह ये समर्थ बुद्धिजीवी लिख कर के समाज को बता जाते हैं शेष फैसला तो केवल जीव नें स्वयं ही करना है उसके प्रत्येक व्यवहारिक सोच के हर एक कण का नतीजा विशेष पहले से ही घोर निश्चित विशेष है अनन्त विकल्पों विशेषों में कहीं भी जीव विचारे प्रत्येक नक्शा पहले से ही व्यवहारिक रूप से विधी विशेष द्वारा एक ही विधान हेतु प्रत्यक्ष उपलब्ध रहता है सभी सम्बन्धित साधनों विशेषों सहित निरन्तर पहले से बढ़कर.....! इसलिये उस में ताज्जुब की कोई बात ही नहीं है कि ऋषियों के नाम पर कोई मत-धर्म अथवा डेरा नहीं है जो भी है वे सब कमाई वाली कामी आत्माओं विशेषों द्वारा बनाया या चलाया गया है परमात्मा अथवा बुद्धिजीवियों के नाम पर.....! इस में परमात्मा का कोई विचारिक भाव भी नहीं है उन सभी के नाम विशेष पर चलाये जा रहे धन्धों विशेषों में इसलिये परमात्मा सावधान करता है उस के नाम की आढ़ में चलाये जा रहे सभी भिन्न-भिन्न धन्धों विशेषों के ठेकेदारों अथवा दलालों विशेषों को, आप को जो कुछ भी करना है “करो !” लोक लाभ या आत्मा लाभ-केवल अपने स्वयं के निजी दुर्लभ नाम विशेष से ही करो न की परमात्मा के नाम की आढ़ में ! करने से पहले

सोचने की छूट है.....! करने के बाद की नहीं क्योंकि प्रत्येक सोच के हर कण का नतीजा वैधानिक रूप से पहले से ही निश्चित है नतीजे के प्रत्येक जर्रे विशेष को बड़े ही विचार से तकनीकी रूप से निश्चित है विशेष किया गया है प्रत्येक दुर्लभ-दुर्लभ आवश्यक जून विशेष के रूप में.....! इस वैधानिक सोच को बदलने का वैचारिक भाव भी उस पूरे सॉफ्टवेयर में किसी के पास नहीं है बल्कि पूरा सॉफ्टवेयर विशेष भी उस विचारिक सोच वैधानिक विशेष के एक जर्रे विशेष को विचारने में घोर असमर्थ विशेष हैं तकनीकी रूप से.....! इसलिये सभी महान-महान बुद्धिजीवियों के नतीजे विशेष-विशेष अपने आप ही निकल चुके हैं उन सभी की निजी सोच के द्वारा किये गये व्यावहारिक विशेष-विशेष कार्यों के द्वारा अब तो केवल भुगतना ही बाकी है.....? व्यावहारिक रूप से.....कैसे ? प्लस तो उनको दे ही दिया गया है व्यावहारिक रूप परमात्मा का बाप बना करके समाज में ढोल विशेष-विशेष पीटे जा रहे हैं.....! अब जितने जीवों के मनुष्य जन्म में ये बाप बनते आये हैं परमात्मा के वो ट्रेस-पास हो गया है इन महान-महान बुद्धिजीवियों का वैधानिक रूप से जो इन्हें अवश्य भुगतना ही है व्यावहारिक रूप से अपनी शेष जमा पूँजी को जल करवा कर तथा ब्याज के रूप में अनन्त काल तक की बड़ी भयानक तड़पाने वाली भट्टियों में तड़प-तड़प कर के सदा के लिये ये पाठ विशेष पढ़ना ही है कि कुछ भी करो स्वयं के

नाम से करो दूसरे के नाम से नहीं बल्कि परमात्मा के नाम से तो कतई भूले से सुपने में भी नहीं.....! दूसरा जितने भी जीवों को मनुष्य जन्म में अपने पीछे लगाया किसी भी रूप में किसी भी कारण से सभी अनुयायियों विशेषों के कमाये हुये प्रत्येक व्यवहारिक कण विशेष का सम्बन्धित आवश्यक आधिकारिक हिस्सा विशेष इन सभी “परमात्मा के बापों” के “निजी विशेष खातों” में तकसीम कर दिया है और तब तक होता रहेगा जब तक सृष्टि चलेगी और इनका विचार विशेष अनआधिकारिक रूप से मनुष्यों के जीवन विशेषों में होता रहेगा.....! प्लस तो अविनाशी मण्डलों में खूब भरपूर भोग चुके परमात्मा के बापों.....! अब माइनस भुगतने की बारी है जो तुम्हारे अनुयायी विशेष निरन्तर पूरे समाज का किसी ना किसी रूप में किसी न किसी कारण से किसी अंग विशेष का ब्लातकार करते आये हैं अथवा निरन्तर करने में ही घौर दुर्लभ व्यस्त विशेष हैं किसी न किसी महान चमत्कारी विशेष के रूप में.....! अब हाथ मलने से कुछ नहीं होगा रोक सकते हो अपने अनुयायियों को तो ये कोशिश कर के भी देख लो रोकना तो एक तरफ रहा, आप पीछे मुड़ कर के भी नहीं देख सकते फिर जो ये महान-महान दुर्लभ हस्तियाँ विशेष जो कमा चुकी हैं उन का हिस्सा तुम्हारे खाते को कैसे तुम्हें बचने देगा.....? जिस ईमानदारी से आज तक दलाली करते आये हो अब इसी वफा से भुगतने विशेष की तैयारी भी करो.....! पहले

आप का बड़ा मीठा सा भ्रम दूर कर दें.....? जो आज तक अनन्त काल में कभी नहीं हुआ वही सब से पहले किया जायेगा यानी के सब से पहले इस “अविनाशी सत्ता” विशेष को ही हजम विशेष कर लिया जायेगा फिर बचने के लिये “नाशवान सत्ता” की शरण लगे वहाँ आप का तो पहले से ही इन्तजार किया जा रहा है, बड़े ही विकराल आवश्यक दूतों विशेषों द्वारा.....! आप के विशेष-विशेष नामों से बनाये गये बड़े ही विशाल -विशाल तड़पाने वाले चैम्बरों विशेषों को आप तब तक रोशन विशेष करेंगे जब तक की आप अच्छी तरह से गुरु विशेष बनने योग्य न हो जायें.....! ये क्रिया विशेष अनन्त काल तक चलेगी “विशेष वैज्ञानिक” रूप से और फिर इन निकृष्ट दलाली जीवों को सदा के लिये मिटा दिया जायेगा और आने वाले सॉफ्टवेयरों में “जड़ प्रकृति” के रूप में प्रत्यक्ष किया जायेगा.....! यानी आप कभी भी अपने मूल को विचारने की भी क्षमता तकनीकी रूप से नहीं विचार सकोगे.....! ये है परमात्मा की सोच, जो प्रत्यक्ष हो चुकी है लेकिन आप तो उसकी सोच विशेष के विचार से भी केवल अनभिज्ञ स्वयं को “जीवन मुक्त” समझने का मीठा सा सपना विशेष संजोये बैठे हैं.....!

7. फोकट का धंधा:- किसे लिये घूम रहा है मूर्ख प्राणी ! कभी सोचा भी है कि उन सभी चालाकियों विशेषों का क्या नतीजा प्रत्यक्ष हो चुका है ? जो कोई भी महान से महानतम समाज में

बलात्कारी विशेष का रोल विशेष अदा कर रहा है किसी भी रूप अथवा किसी भी अंग विशेष का भक्षण विशेष कर रहा है मुबारक है.....! बस अब भुगतने के लिये तैयारी करनी बाकी है यह सब तो सभी जान चुके हैं ! अब इन बलात्कारियों से सम्बन्धित जो समाज विशेष हैं उस को ब्यान करना है यकीनी तौर पर ! सब से पहले तो उस रंडी विशेष के बाल पकड़े जायेंगे ! घसीट कर सदा के लिये नरकों में दफन करने हेतू जिन्होंने उन महान-महान बलात्कारियों को जन्म तो दे दिया लेकिन मनुष्यता का आवश्यक पाठ विशेष नहीं पढ़ाया बस शक्ल देख-देख कर ही आरती उतारती रहीं और कुर्बान जाती रहीं ! फिर उन सुन्दरियों विशेषों को लोहे के कंटीले तपते सुर्ख सुन्दर-सुन्दर भारी कड़े विशेष पहना कर श्रृंगारित कर के नरकों विशेषों में घसीटा विशेष जायेगा जो जिन्दगी भर उन बलात्कारियों की अर्धांगियाँ बनी इतराती रहीं उन की बलात्कारी कमाई विशेष पर “चौकीदारी” करने में विशेष रूप से असमर्थ रहीं जिस के लिये इन्हें ब्याह कर के घर में लाया गया था फिर बारी आयेगी इन प्रमादी जोड़ों विशेषों के सुन्दर-सुन्दर मासूम बच्चों विशेषों की, जो जिन्दगी भर बलात्कारी कमाई पर “अय्याशी” विशेष करते रहे और अहंकार में डूबे पूरे समाज में बलात्कारी के गदे और कमीने बीज विशेष महामारी के रूप में फैलाते आये.....! इन के सभी सुन्दर-सुन्दर कोमल अंगों में कीलें ठोकी जायेंगी जो टुक कर के तप कर लाल

अंगारों में बदल जाती हैं और फिर विशेष रूप से निकलती नहीं हैं.....! फिर अब बारी है इनके प्रभावकारी सम्बन्धियों और जानकारों विशेषों की जिन का जितना बड़ा आधिकारिक व्यवहार इन-इन उच्च परिवार वालों से है उन-उन सभी महानुभावों को उन के अपने सभी महान-महान सम्बन्धित सम्बन्धियों और जानकारों सहित को सदा के लिये भयानक घोर नरकों में दफन विशेष कर दिया जायेगा जहाँ केवल तड़पना विशेष होता है केवल खामोश विशेष रह कर.....! इन सभी के लिये केवल एक ही वरदान विशेष है कि ये सभी भिन्न-भिन्न बलात्कारी अपने-अपने रसूख-दायरे सहित “अमर” विशेष जैसे हैं अर्थात् इन्हें “मौत” उपलब्ध नहीं है फिर यानी के केवल खामोश विशेष रह कर केवल तड़पना मात्र है भिन्न-भिन्न महा कमीनों तरीकों विशेषों से “अनन्त काल” विशेष तक के लिये.....!

अब बलात्कारी जैसे महान पेशे विशेष में समाज का कोई भी जीव अपना विशेष नाम दर्ज करवा सकता है.....! बस उसे व्यवहार से केवल साबित भर करना होगा कि वो कितना निपुण और चतुर पेशेवर खिलाड़ी विशेष है उस दुर्लभ आवश्यक खेल विशेष का.....! यानी कि कोई भूले से भी पहचान न सके अर्थात् बाहर से पूरे लाभकारी-दुर्लभ-सफेदपोश-भोले-भाव-भण्डारी.....! परन्तु अन्दर से भरपूर “काले-स्याह” लोभ-स्वार्थ की

निजी अनन्त गिरी हुई वासनाओं के अथाह सागर में गोते लगाते हुऐ सदा निर्माग्न = व्याभीचारी विशेष-विशेष.....!

इन की पहचान ? बड़ी सीधी सी बात है कि समय “कल” के काल में कोई भी जीव यदि किसी भी प्रकार से किसी भी रूप में किसी भी मात्रा विशेष में यदि आप के प्रति सहानुभाव को प्रदर्शित करता है तो धीरे से निश्चित रूप में समझ लो कि बलात्कारी अपनी “कला विशेष” का प्रदर्शन करने के लिये प्रयत्नशील हो रहा है जो शीघ्र ही अपनी व्यवहारिक पहचान साबित करेगा जिस के लिये उसने बड़े यत्न से प्रमाण पत्र विशेष हासिल किया है अपनी ही बनाई हुई दुर्लभ आवश्यक सरकार विशेष से.....!

कुछ विशेष नाम उपलब्ध हैं जानकारी के लिये “धर्म और राजनीति”! इन समाज के दोनों अंगों से सम्बन्धित विशेष अधिकारी जन अपने-अपने सहयोगियों और अनुयायियों सहित परिवारिक सम्बन्धों और जानकारों को ले कर शामिल हैं आधिकारिक व्यवहारों सहित निश्चित रूप से.....!

परमात्मा की पहचान केवल जून है धर्म और नीती आप की अपनी सुंदर और महान सोच का निकृष्ट और कमीना पहलु है जो आप ने स्वयं बड़े यत्न से सोच कर पैदा किया है और निरन्तर उसे और कमीना विशेष बनाने के लिये ही लगातार प्रयत्नशील हैं.....! ताकी पूरी मनुष्य जून सदा के लिये नर्कों में

दफन विशेष हो जाये.....! अब इन **“दल्ले विशेषों”** को किस श्रेणी में रखोगे जो मत-धर्म में विशेष-विशेष ओहदों पर गद्धियाँ बिछाये गुरु-सतगुरु बने बैठे हैं जो छोटे से बलात्कारी लफ़्ज़ विशेष में तो कतई फिट नहीं हो सकेंगे.....! पूरा समाज उन के बलात्कारी प्रभावों से निरन्तर तड़प रहा है प्रत्येक अंग समाज का पूरी तरह से सड़ चुका है उनके व्यवहारों विशेषों से परन्तु फिर भी ये संस्कृत-पंजाबी इत्यादि भाषा विशेषों को ही प्रचारित विशेष करने में व्यस्त अपने को महान विशेष साबित कर रहे हैं परमात्मा के नुमायदें विशेष बन कर.....! समाज का प्रत्येक अंग विशेष किस अभाव विशेष में डूबता चला जा रहा है उसे कैसे रोका विशेष जाये, इस का ज्ञान ये इनका **“दोगला”** परमात्मा विशेष देने में सदा से ही प्रत्येक काल में असमर्थ विशेष रहा है.....! बल्कि विशेष-विशेष दुर्लभ नाम-अमृत देने में ही अपने को सदा व्यस्त विशेष किये हुऐ हैं.....! लेने वाले किस गंदे और भयानक तरीके विशेषों से पूरे समाज का रेप विशेष करने में व्यस्त हैं उससे इन दल्लों अथवा इन प्रभुओं विशेषों का कोई भी सरोकार विशेष नहीं है.....! बस आँख बन्द होते ही ये उसे कंधे पर बैठा कर सचखण्ड ले जायेंगे.....! शेष सभी इनके किये हुऐ महान-महान बलात्कार विशेष बाबा जी विशेष-विशेष फूंक मार के धुँआ बना कर हवा में लुप्त करा देंगे.....! ऐसे महान कार्य के बदले में क्या आप इन्हें कुछ नहीं दोगे.....? क्या केवल टोकरे अथवा दान पेटी विशेषों

में डालने से ही दुर्लभ कार्य विशेष पूरा हो जायेगा.....? ये तो सरासर नाइंसाफी है प्रभु के दरबार विशेष में.....! फिर कुछ तो करना ही पड़ेगा चलो इनका बलात्कार विशेष किया हुआ विशेष-विशेष कर्म आधिकारिक रूप से आधा अधिकारी तौर पर इन दलाल नाम के सतगुरुओं विशेषों के निजी खजाने में जमा कर दिया गया है.....! प्रभु के घर में देर की कोई गुंजाइश ही नहीं है फिर अंधेर का क्या विचार प्यारे-प्यारे बाबा जी विशेषों-2-महान-महान महानतम महानुभावों.....! बस आप के क्रेडिट कार्डों के पोजिटिव भुगतान को पूर्णतया समाप्त होने का इन्तज़ार भर है प्रभु के विशेष-विशेष विकराल गण विशेष.....! चिन्ता मत करियेगा आप के स्वागत और देखभाल का पूरा-पूरा **“आधिकारिक समर्था”** को विशेष ध्यान में रख कर के ही इन्तजाम विशेष किया गया है विशेष-विशेष चैम्बरों विशेषों में.....!

समाज के प्रत्येक तरह के मनुष्य उपलब्ध हैं-कारण प्रत्येक जीव की **“व्यवहारिक सोच”** से नतीजों में विभिन्नता आती है जो आधिकारिक रूप से एक ही जून होने के बावजूद उस के रंग-रूप-कद-काठी-स्थान और सोच पर पूरी तरह से प्रभाव डालती है.....! इस तरह से एक ही जून आन्तरिक रूप से एक ही ढाँचा विशेष लिये हुऐ एक ही समाज में विभिन्नता उत्पन्न कर देती हैं । फिर ये ही भिन्नता बढ़ती हुई लगातार सतयुग से कलयुग

और फिर मिटाने पर विवश कर देती हैं विधि को तकनीकी रूप से.....! कारण सौ पैसे का सतयुग में जन्म, “कल विशेष” तक पहुँचते हुऐ घटता हुआ दो-चार पैसे का ही बाकी रह जाता है । फिर 96% का पिछला निश्चित भुगतते हुऐ मनुष्य जन्म का कुछ भी विशेष अर्थ ही नहीं रह जाता.....!

एक जीव का दूसरे जीव की व्यवहारिक सोच में दखल विशेष ही बलात्कारी स्थिति को पैदा करने का समर्थ आधिकारिक साधन विशेष बनता है नतीजे के रूप में समाज का पतन विशेष निश्चित होता जाता है यकीनी तौर पर । विधि समय से बंधी प्रत्येक जीव की व्यवहारिक सोच के प्रत्येक कण को पूरे-पूरे ब्याज सहित समयानुसार सभी अंगों व्यवहारों को साधनों सहित उपलब्ध विशेष कराती है निरन्तर बिना किसी भेद-भाव अथवा संवेदना विशेष के प्रत्येक आवश्यक “काल विशेष” में सम्बन्धित आधिकारिक तौर पर.....! परन्तु कभी-कभी बीच में ऐसी स्थिति आ जाती है जहाँ दो जीवों के व्यवहारों विशेषों का ऐसा टकराव प्रस्तुत होता है जहाँ दोनों जीव विभिन्न जूनों विशेष में होते हैं । जैसे एक जीव मनुष्य जून में है और उस के किये गये व्यवहारिक दखल विशेष का मुआवजा लेने वाला दूसरा जीव ऐसी जून में है जो मनुष्य की आँख से देखी नहीं जा सकती यानी के भूत अर्थात् बीत चुका के रूप में.....! भूत का आवरण यानी कि शरीर सूक्ष्म

वायुमयी होता है तथा वायु से सम्बन्धित सभी प्रकार की “आधिकारिक” चारित्र का समर्था विशेष सम्बन्धित जीव विशेष को उपलब्ध रहती है कमाई अनुसार । उस समर्था विशेष के रहते जीव विशेष अपने मुआवजे विशेष को तुरन्त प्राप्त करना चाहता है विधि के विधान का समय विशेष उसे मंजूर नहीं होता । यह एक तकनीकी अधिकारी पहलू है प्रत्येक जीव का । इस का फायदा प्रेत जून का जीव मनुष्य जून के केवल अधिकारी जीव के संग में प्रस्तुत होता है शेष फिर जो-जो उस मनुष्य के संग में प्रेत जीव के अधिकार में प्रवेश करते हैं प्रेत का उन के प्रति भी आधिकारिक दखल उपलब्ध हो जाता है और इस तरह से बहुत खराब नतीजे जो समाज के लिये घातक होते हैं प्रत्यक्ष होते हैं । यह समस्या एक विधि में आधिकारिक रूप से उपलब्ध है । ऐसा नहीं है कि कोई भी प्रेत जून का जीव किसी भी मनुष्य जून के अधिकार विशेष में प्रवेश करे । विधि का “प्रत्येक कण” विशेष पर पूरा आधिकारिक आवश्यक नियन्त्रण विशेष है प्रत्येक काल में “निरन्तर”.....! जितने भी दावे संसार में पेश किये जा रहे हैं प्रेत मुक्ति के सभी केवल मीठा सा झूठ विशेष हैं । जब तक एक जीव का आधिकारिक दखल विद इंटेरेस्ट पूरा विशेष नहीं हो जाता दूसरा जीव बच नहीं सकता आधिकारिक रूप से विधि का विधान उस के लिये सदा खामोश उपलब्ध विशेष रहता है । हिसाब पूरा होने पर प्रेत एक पल के लिये भी अधिक दखल नहीं कर

सकता और दूसरे जीव के संग से अलग हो कर उसी स्थान विशेष दूसरे पर प्रत्यक्ष मौजूद रहता है आवश्यक तौर पर आधिकारिक रूप से । प्रेत मुक्ति जैसी कोई कल्पना भी नहीं है । प्रेत जून से जीव विशेष को तभी छुटकारा विशेष मिलता है जब जीव सम्बन्धित सभी प्लस-माईनस भुगतान अपनी विशेष-विशेष वासनाओं के नतीजे के रूप में ब्याज सहित पूरा-पूरा भुगत विशेष लेता है अर्थात् उस की सभी विशेष-विशेष वासनायें सम्बन्धित विकारों सहित पूरी तरह से मिट जाती हैं सदा के लिये.....! और उस क्रिया विशेष आवश्यक में युगों-युगों तक का आवश्यक समय विशेष लगता है निश्चित तौर पर । सभी प्रकार के धार्मिक कर्म-काण्डों का इस में कोई भी दखल नहीं है मुक्ति विशेष के लिये । जो हल विशेष दिखाई देते हैं असल में धोखा विशेष हैं । जो जीव प्रेत जून में है वो अपने पिछले मनुष्य जन्मों में जिन-जिन आस्था-विश्वासों में फँसा मानता चला आया है उसे उन-उन धार्मिक कर्म-काण्ड व्यवहारों विशेषों का परहेज या संयोग व्यवहारिक रूप से उपलब्ध विशेष रहता है । जिसका संयोग वस टकराव उस की प्रसन्नता या अप्रसन्नता का कारण विशेष बनता है आधिकारिक रूप से । नतीजे स्वरूप संयोग या वियोग प्रत्यक्ष होता है जिसे आप अपनी निजी सफलता विशेष मान बैठते हैं और इसी धन्धे में लग अपने लिये भी “प्रेत जून” का ही वैद्यानिक आधिकारिक साधन उपलब्ध कर अपने ही हाथ से अपने पतन

का लेख विशेष लिख बैठते हैं.....! दूसरा प्रभाव होता है कर्म-काण्ड विशेष करने वालों की अपनी निजी कमाई विशेष दुर्लभ का.....! जो प्रत्येक व्यवहारिक सोच के खर्च होते ही घटती जाती है कारण जज का अधिकार विशेष केवल विधि विधान को है विशेष आधिकारिक रूप से जिस में शक की गुंजाइश नहीं रहती क्योंकि ये प्रत्येक जीव के अनन्त जन्मों का कार्मिक वैधानिक व्यवहारिक सम्बन्ध विशेष है जिसे कोई तो क्या सभी महान से महानतम जीव मिल कर के भी नहीं विचार सकते फिर जजमेंट का अधिकार कैसा ? (सभी परमात्मा के बापों-सतगुरुओं-पैगम्बरों इत्यादि की सभी महान से महानतम जानकारी भी केवल एक तुच्छ निकृष्ट जर्ने विशेष जैसी है जिस का कोई अर्थ है तो केवल अनर्थ अर्थात् उन की सीमा है जो नगण्य है !) दूसरा इस समस्या का आधिकारिक कारण है हजारों बरसों से मुर्दे को कब्रों में सजा कर रखना और उन कब्रों पर मन्त्रतें मांगना-सिजदा करना जिस से आधिकारिक ट्रेस-पास भी बनता है और जीव प्रेत जूनों में गिर कर भटकता दूसरों के पतन विशेष का आवश्यक साधन विशेष बनता है । इस समस्या का वैधानिक उपाय है मरने वाले जीव की सभी सामग्री उस की सभी यादों सहित व्यवहारिक रूप से सदा के लिये मिटा देना और अपने दुर्लभ जीवन विशेष को पूर्णतया मर्यादित विशेष कर निरन्तर प्रभु को अपने ही अन्तर में अनुभव करने की दुर्लभ आवश्यक वासना विशेष लिये लगातार

प्रयत्नशील विशेष रहना व्यवहारिक रूप से.....! आप के अपने ही हाथों बनाये हुये भिन्न-भिन्न महान-महान स्थानों विशेषों पर जो स्थिति विशेष अनुभव होती है उस का कारण आप की मानसिकता का विकारग्रस्त होना है तथा जो जीवात्मायें अपनी किसी विशेष वासना हेतु वैद्यानिक रूप से प्रेत जूनों में गिर गई हैं और उन्हें विशेष स्थान आधिकारिक रूप से वैद्यानिक उपलब्ध है और उनके पास अपनी विशेष-विशेष दुर्लभ आवश्यक कमाई भी प्रत्यक्ष उपलब्ध है वे जीव प्रेत जून में अपनी कमाई विशेष खर्च कर मनुष्य जून में उपलब्ध जीवात्माओं के विश्वासों अन्धी आस्थाओं का फायदा विशेष उठा कर उन्हें प्रेरित विशेष करती रहती हैं और “अन्ध” कमाई रहित जीव दुर्लभ मनुष्य जैसी जून विशेष में भी इन व्यर्थ की फोकट धार्मिक क्रिया कर्म-काण्डों में फँस कर अपना दुर्लभ मनुष्य जन्म विशेष नष्ट करता चला जाता है और प्रभु की आवश्यक खामोश तल्लीनता विशेष को अपने किये का शुभ विशेष मान कर स्वयं को सराहता विशेष रहता है फिर तो उसे स्वयं के सजने विशेष से ही फुरसत नहीं मिलती.....! जिस का नतीजा है सोने से भरे मन्दिर-डरे इत्यादि महान-महान स्थान विशेष.....! जहाँ प्रभु की मीठी सी कल्पना विशेष लिये महान से महानतम मूर्ख विशेष-विशेष बैठे हैं अपना तथा दूसरों का मनुष्य जन्म नष्ट विशेष करने के लिए.....! “काइया-महल-मंदर-घर हरि का जिस में रखी ज्योति अपार” को भुला कर खाना तो दूर

पीने को पानी भी उपलब्ध नहीं है इसी जीव को, और इनका “दोगला प्रभु” इन महान-महान जीवों के महानतम बलात्कार विशेषों का हिस्सा स्वीकार कर इन की मन्नतें पूरी करने में ही लगातार दुर्लभ व्यस्त विशेष है व्यवहारिक तौर पर.....! अपना कमीने सा कमीना रेप सामने रखो और प्रार्थना-अरदास-मन्त्र वगैरह-वगैरह कर्म काण्ड विशेष-विशेष करो फिर देखो दोगला प्रभु आप के इस रेप विशेषों को कैसे नाम-अमृत-मुक्ति इत्यादि चमत्कारों विशेषों में बदल देता है केवल भैंगी दृष्टि विशेष भर मार के ही आप को धर्मात्मा विशेष आधिकारिक रूप से घोषित कर देता है.....! “याद रखो एक भी जीव को भूखा-प्यासा रख कर के किया गया आप का प्रत्येक महान से महानतम-चढ़ावा-फूल-सोना-दुर्लभ-दुर्लभ सामग्री-कर्म-काण्ड स्पेस प्रोग्राम सभी एम्पायर-निर्माण-इतिहास वगैरह-वगैरह केवल घोर भयानक नर्कों विशेषों का दुर्लभ आवश्यक साधन विशेष हैं जो आप स्वयं बड़ी सोच समझ से निरन्तर केवल बढ़ाने और स्वयं के तड़पने विशेष के लिये ही एकत्र विशेष किये जा रहे हैं।” कोई अगर चाहे कि उसे बड़ी जल्दी किसी बढ़िया से तड़पने वाले नर्क विशेष तक पहुँचना है तो जान लो बता रहे हैं किसी से मत कहना “धर्म अथवा नीती” से चाहे कितनी ही दूरी से क्यों न हो किसी भी रूप में व्यवहारिक-मानसिक सम्बन्ध बना लो व्यवहारिक रूप से.....! बस आप तुरन्त घोर भयानक तड़पने वाले नर्कों विशेषों के

अधिकारी करार दे दिये जाओगे फिर पहुँचना कौन सा दूर बस आप की आँख बन्द होने का इन्तजार विशेष किया जायेगा.....! इन्तजार का कारण आप के उपलब्ध नतीजों के पूरे होने का प्रभु का सांकल्पिक इरादा विशेष विधी के वैद्यानिक आवश्यक विधान के रूप में....!

४. **“मन= अन्न”** :- मन का सीधा तथा आधारभूतिक सम्बन्ध अन्न से है वैद्यानिक आवश्यक रूप से.....! इस का भाव मन के कार्य करने की आधारिक क्षमता से नहीं है । कार्य करने की ताकत विशेष आवश्यक रूप से उसे आत्मा से प्राप्त होती है । लेकिन उस चल रहे तमाशे में उसे अहम भूमिका निभानी है जो पक्षपात रहित सभी के लिये एकसार हो । इसलिये जो ढाँचा विशेष प्रकृति अथवा विधि से प्राप्त होता है उस का पोषण भी प्रकृति के सूक्ष्म तत्वों विशेषों से ही होता है । जब सृष्टि आरम्भ होती है तब पोषण की क्षमता बहुत थोड़ी और केवल सूक्ष्म तत्वों विशेषों पर ही आधारित विशेष होती है पर जैसे-जैसे जीव लोभ-स्वार्थ में डूबता जाता है इसे स्थूल तत्वों का सहारा लेना आवश्यक हो जाता है अर्थात् प्रकृति अपने सार विशेष को समेटती चली जाती है कानूनी तौर पर फिर इसे स्थूल तत्व भी उपलब्ध नहीं होते जो कि पहले इस के कदमों के नीचे स्वभाविक रूप से सदा निरन्तर उपलब्ध विशेष रहते थे ! **“लोभ”** पाप को जन्म देता है और जैसे-जैसे लोभ-स्वार्थ की मात्रा बढ़ती है उस का अपराध यानी के मर्यादा

हीनता भी बढ़ती जाती है फिर वैसे-वैसे प्रकृति का आधारभूतिक सच विशेष भी सिमटता जाता है और फिर उसे सरवाईव करने हेतु प्रकृति से पोषण विशेष प्राप्त करने के लिये निरन्तर संघर्ष विशेष करना पड़ता है । फिर जैसे-जैसे अपराधिक जीव विशेष प्रकृति की जड़ जूनों में फँसते जाते हैं उन का प्रभाव पोषण के साधनों पर पड़ता है अर्थात् संघर्ष में की गई मर्यादाहीनता तथा उपलब्ध जहर से भरे जीवों विशेषों के कारण ही प्रकृति का आधारभूतिक सत्व विशेष सदा के लिये लुप्त विशेष होने लगता है जिस से जीव का जीवित रहने का लोभ संघर्ष विशेष को बढ़ाता जाता है । ज्यादा संघर्ष अधिक मर्यादाहीनता को प्रत्यक्ष करता है व्यावहारिक रूप से जिस का नतीजा सत से कलयुग फिर जीव के मनुष्य जन्म में प्रत्यक्ष होने का अर्थ ही खत्म हो जाता है और सारहीन हो चुकी प्रकृति विशेष को लुप्त होने अर्थात् मिटने के सिवा और कोई विकल्प ही नहीं रहता । यह क्रिया कानूनी तौर पर बंधी स्वचालित है प्रकृति की जो सभी जीवों विशेषों को उन के किये हुए **“व्यावहारिक सोच”** के अनुसार बिना पक्षपात के बड़े ही सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में प्रत्येक सोच के कण विशेष को ध्यान विशेष में रख कर के ही प्रत्येक **“जीव विशेष”** को बांधे रहती है वैज्ञानिक रूप से **“प्रत्येक काल”** में **“निरन्तर”** आवश्यक आधार के रूप में ! सृष्टि के आरम्भ में प्रत्येक पदार्थ हर एक जीव को केवल उस के विचार विशेष से ही विधि प्रकृति विशेष के रूप में

उपलब्ध विशेष करवा देती है व्यवहारिक रूप से.....! लोभ-स्वार्थ से घटती हुई यह स्वभाविक चमत्कारी अवस्था विशेष जीव को संघर्ष के लिये मजबूर विशेष करती हुई निचली जून में गिराती हुई घौर भयानक नर्कों में तड़पने के लिये मजबूर विशेष कर देती है वैद्यानिक तौर पर.....! और फिर जब तक जीव की प्रत्येक वासना विशेष का सूक्ष्म से सूक्ष्म कण भी भुगतने की घौर भयानक अवस्था विशेष से धुल विशेष कर पूर्णतया साफ विशेष नहीं हो जाता जीव अपनी पहले की स्वभाविक विशेष चमत्कारी अवस्था को फिर से अनुभव करने में घौर असमर्थ विशेष ही रहता है कानूनी तौर पर.....! उस सच्चाई पर जल्दी से यकीन करना शुरू कर दो अपने ही कल्याण हेतू । फिर नाम-अमृत विशेषों-विशेषों का क्या लाभ.....? स्वयं की महान बुद्धि विशेष से विचारो.....! प्रभु के उस वैद्यानिक सृष्टि चक्र विशेष में किसी की भी दखल नहीं चलती जो कोई भी कोशिश विशेष करता है विधि बहुत चालाकी से उसे भी दखल अंदाजी विशेष की ही मर्यादाहीनता का आधिकारिक हिस्सेदार विशेष बना कर बालों से पकड़ कर वहीं घसीट कर ले जाती है जहाँ कि उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी क्योंकि ये सभी दल्ले महान विशेष-विशेष स्वयं को तो जीवन-मुक्त समझे रहते हैं और विधि भी उन्हें यही साबित करती रहती है प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से लेकिन अन्दर से बड़े ही ध्यान से एक-एक पाई विशेष घटाती रहती है उन की दुर्लभ

आवश्यक कमाई विशेष से फिर आखिर चिर काल के बाद ही सही वो घड़ी दुर्लभ विशेष आ ही जाती है आवश्यक रूप से जब सभी उपलब्धी सम्बन्धित विशेष दखल देने वाली की दुर्लभ आवश्यक पूँजी विशेष खत्म हो ही जाती है और विधी वैधानिक तौर पर घसीट कर ले जाती है और जीव अपनी उस गिरी निकृष्ट अवस्था विशेष को बताने के योग्य ही नहीं रहता फिर बताये तो बताये किसे.....? सभी की अवस्था उस चिर काल विशेष में बदल चुकी होती है उस भयानक सृष्टि चक्र विशेष में हिस्सा बने दुर्लभ-दुर्लभ आवश्यक जीवों विशेषों की.....! जीव की प्रत्येक व्यवहारिक सोच के हर एक सूक्ष्म से सूक्ष्म कण विशेष से प्रत्येक आत्मा के सूक्ष्म विशेष दायरे में “प्लस-माईनस” का एक आवश्यक विशेष आवरण बनता जाता है जिसे सिवाय विधि के कोई भी विचार ही नहीं सकता फिर देखना या दखल देना कौन सी कल्पना.....? प्रत्येक दखल अथवा समाधान एक बड़ा ही मीठा सा व्यवहारिक धोखा है विधि का वैधानिक तौर पर.....! उस का वैधानिक व्यवहारिक उपाय है पिछला ब्याज सहित पूरा-पूरा पूर्ण व्यवहारिक ईमानदारी विशेष से भुगतान भुगतना तथा आगे के लिये पूर्ण ईमानदारी से व्यवहारिक रूप से सदा के लिये पूर्णतया तौबा विशेष अर्थात् अपने को बचाये रखने के लिये लगातार मर्यादित विशेष बनाये रखना “व्यवहारिक तौर” पर न कि खोखले “फोकट” के दिखावी तौर पर.....! माफी-बख्शना-

प्रार्थना-फरियाद-कृपा-धार्मिक-कार्मिक-कर्मकाण्ड इत्यादि-
इत्यादि चालाकियों विशेषों का कोई वैधानिक योगदान विशेष
नहीं है आंशिक रूप से भी जीव के छूटने विशेष में इसे अच्छी
तरह से गाँठ बाँध लो महान-महान विद्वान बुद्धिविहीन जनों.....!
प्रत्येक जीव का “फैसला विशेष” उस की स्वयं की प्रत्येक सूक्ष्म
से सूक्ष्म व्यवहारिक सोच का दूसरे प्रत्येक जीव सहित पूरी सृष्टि
विशेष पर कैसा व्यवहारिक सोच सहित प्रभाव विशेष पड़ता है
वैधानिक तौर पर इस का व्यवहारिक नतीजा विशेष आवश्यक
रूप से प्रत्येक सम्बन्धित जीव के निजी आवश्यक खाते विशेष
में दर्ज कर दिया जाता है “माईनस अथवा प्लस” के रूप में
भुगतने हेतु अवश्य आवश्यक रूप से अनन्त प्रयासों अथवा
विशेष-विशेष कर्म काण्डों विशेषों के बावजूद अनन्त काल के
बाद भी ब्याज सहित दखल किये गये विलम्ब काल सहित पूर्ण
ईमानदारी के साथ केवल “निजी भुगतान” हेतु सम्बन्धित साधन
रत व्यवहारिक जीवों सहित निरन्तर विधि के वैधानिक तौर पर
पूरा का पूरा भुगतना ही पड़ता है.....! यह आवश्यक नतीजा
विशेष प्रत्येक जीव का अनन्त काल विशेष से अनन्त काल का
सदा निरन्तर घटता-बढ़ता प्रत्येक जीव की व्यवहारिक सोच
अनुसार आधिकारिक तौर से विधि, निरन्तर स्वचालित विशेष
रखती है प्लस-माईनस के रूप में प्रत्येक जीव की व्यवहारिक
सोच विशेष के अनुसार आधिकारिक तौर पर.....! इस का भान

केवल विधि के अधिकार विशेष में सुरक्षित रहता है और विधि उसी स्वयं की उपलब्ध प्रभुता के अनुरूप ही प्रत्येक जीव को अनन्त मण्डलों में उस की सोच विशेष के अनुरूप सूक्ष्म-स्थूल प्रकृति उपलब्ध कराती रहती है निरन्तर.....! प्रत्येक जीव के पास अनन्त विकल्प विशेष मौजूद रहते हैं काल विशेष में विशेष परिस्थितियों विशेषों में.....! यही जीव विशेष की स्वतंत्रता विशेष है “काल विशेष” में कृत अनुसार.....! जीव उन उपलब्ध परिस्थितियों विशेषों में किसी भी विकल्प विशेष को चुने विधि इस को पहले से ही जानती है.....! क्योंकि सभी विकल्पों को विधि पहले से ही विचार कर सभी सम्बन्धित साधनों विशेषों सहित व्यवहारिक रूप से उपलब्ध विशेष कराती है निरन्तर प्रत्येक जीव के “भोग-भुगतान” हेतु वैधानिक रूप से निश्चित वैचारिक “नतीजे विशेष” के रूप में.....! अतः विधि द्वारा उपलब्ध निजी भुगतान विशेष को पूरी ईमानदारी से स्वीकार कर पूर्णतया हज़म विशेष करना ही जीव प्रत्येक विशेष की स्वयं की कमाई हुई “कल्याणकारी” दुर्लभ आवश्यक स्थिति विशेष है जिस में जीव को सच्ची निजी आवश्यक संतुष्टि दुर्लभ विशेष अनुभव होती है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से.....! ऊपरी शुद्ध रूहानी मण्डलों में अनन्त काल से रह रहा जीव प्रभु की सूक्ष्म व्यवहारिक क्षमता में स्वयं को भी विचारशील करने लगता है और स्वयं प्रभु की उपलब्ध “समर्था विशेष” को अपनी विशाल समर्था विशेष से विभिन्न दायरों

विशेषों में देखने की कल्पना विशेष करने लगता है जो एक आवश्यक बहुत ही सूक्ष्म अंग विशेष को जन्म देता है जो जीव को वैधानिक रूप से विधि द्वारा प्रेरित कर कार्यशील रूहानी मण्डलों विशेषों की ओर जीव को प्रेरित करता है । प्रत्येक मंडल विशेष विधि की उपलब्ध सूक्ष्म प्रकृति विशेष समर्थ जीवों विशेषों को अपनी आधारभूत चरित्र से प्रभावित करती है जो सम्बन्धित जीवों विशेषों को धीरे-धीरे कार्यशील बनाने लगती हैं यह क्रिया इतनी सूक्ष्म लेकिन प्रभावकारी होती है कि कब जीव विशेष कार्यशील हो कर स्वयं का “प्रभुत्व विशेष” शेष प्रभुता पर स्थापित करने लगता है इस का पता स्वयं जीव को भी नहीं लगता.....! अनन्त प्रभुता के समक्ष प्रत्येक जीव की क्षमता कितनी भी विशाल क्यों न हो तुच्छ अर्थात् बहुत छोटी ही साबित होती है फिर पूरी प्रभुता को प्रभावित करने के चक्कर में जीव अहम में डूबता निचले स्थूल मण्डलों की ओर प्रेरित होता रहता है “विधि विशेष द्वारा” जहाँ उस का स्वयं का स्वार्थ इतना अधिक बढ़ जाता है कि सब मेरे अधीन हों और फिर सदा मेरी ऐसी ही स्थिति विशेष-विशेष बनी रहे का लोभ उसे वैधानिक कारणों से बहुत धीरे-धीरे सूक्ष्म रूप से मर्यादाहीनता की ओर प्रेरित करता रहता है इस दायरे में पहुँच कर फिर गिरने की तो कोई सीमा ही नहीं रहती अहंकारी जीव के समक्ष.....! बस फिर शुरू होती है इस समर्थ जीव के भयानक दुखों विशेषों की दास्तान विशेष जिस के अन्त का-

अनन्त काल का भयानक दौर विशेष भी पूरा करने में घौर असमर्थ ही साबित हुआ है व्यवहारिक तौर पर आद विशेष से चला हुआ.....! जीव जब निचले स्थूल व्यवहारिक कार्यशील रूहानी मण्डलों में प्रवेश करता है तो उसे वहाँ की सूक्ष्म व्यवहारिक प्रकृति अनुसार वहाँ के वैधानिक प्राकृतिक साधनों को प्रयोग करने हेतु एक सूक्ष्म साधन विशेष की आवश्यकता होती है जो केवल उसी का “निज स्वरूप” जैसा समर्थ हो.....! यह मांग उसकी विधि पूरी करती है एक ऐसा समर्थ “सॉफ्टवेयरर विशेष” प्रदान कर जिसे रूहानी भाषा में “मन” कहा गया है । उस की रचना प्रकृति के सूक्ष्म विशेष अग्नि तत्व से प्रत्यक्ष की गई है उपलब्ध अग्नि बहुत विकृत लेकिन आवश्यक स्वरूप है सूक्ष्म आवश्यक तत्व का वैचारिक रूप में.....! उस की स्वयं की क्षमता ज़ीरो है व्यवहारिक रूप से यह आत्मा में जो केवल एक बहुत ही सूक्ष्म सा प्रकाशित पुंज विशेष मात्र है में समाया रहता है वैधानिक तौर पर उसी से प्रेरित हो कर सम्बन्धित मण्डलों में कार्यशील होता है केवल सम्बन्धित आत्मा विशेष के आवरण में सीमित रह कर लेकिन वैचारिक रूप से इस क्षमता विचार से भी अधिक तेजवान गतिशील होती है जहाँ उसकी ऊर्जा का स्रोत आत्मा है तो उस का झुकाव रूप रचना की ओर अधिक आकर्षित होता है दूसरा उस में क्षमता है अनन्त काल की सम्बन्धित जीव की प्रत्येक सोच के हर एक सूक्ष्म से सूक्ष्म व्यवहारिक कण विशेष को नतीजे

सहित संगृहित रखने की.....! उसी कारण यह जीव की अवचेतन अवस्था विशेष में भी यह निरन्तर जाग्रत रहता है और इस अवस्था में यह अधूरा विकृत ज्ञान प्रस्तुत करता और की गई अथवा विचारी हुई कल्पनाओं विशेषों को ही दोहराता रहता है “निरन्तर” जो कभी-कभी सपनों यानी के अवचेतन मन की धाराओं के रूप में जीव लगातार अनुभव करता रहता है जाग्रत अथवा सोई हुई अवस्था विशेष में अर्थात् उसे निरन्तर चिन्तन का रोग लगा हुआ है अब यह सम्बन्धित आत्मा पर निर्भर करता है कि वह किस का चिन्तन अधिक पसन्द करती है अपने स्वार्थ विशेष को पूर्ण करने हेतू.....! उसमें किसी का दखल नहीं चलता प्रत्येक आत्मा को स्वयं ही निजी तौर पर प्रत्येक सोच विशेष का फैसला विशेष करना पड़ता है निरन्तर स्वयं के ही कल्याण विशेष हेतू.....! फिर निरन्तर जीव को सम्बन्धित स्वार्थ के कार्यान्वित व्यवहारिक स्वरूप को अनुभव विशेष करने के लिये निरन्तर चिन्तन कर व्यवहारिक सोच को कमाना विशेष पड़ता है यही इस का स्वाभाविक इलाज विशेष भी है अर्थात् उसे सदा अपने लाभकारी नतीजे के लिये सम्बन्धित साधनों में निरन्तर क्रियाशील रखो फैसला तो जीव स्वयं ने ही करना है कि उसे यहीं के सम्बन्धित मण्डलों विशेषों में ही रहना है या ये जहाँ से आया है वहाँ उसे ऊपर के मण्डलों विशेषों में वापस लौटना है.....! मन तभी साथ देगा जब आप इसे सभी उपलब्ध लाभों से ज्यादा बड़ा लाभ सभी

उपलब्ध साधनों से साबित कर के अनुभव विशेष करवाओगे फिर यह ज्यादा के चक्कर विशेष में केवल वही कार्य विशेष सिद्ध करने के लिये निरन्तर कार्यशील हो कर दिन-रात चिन्ता विशेष करने लगेगा.....! निचले मण्डलों का छोटा सा एक भी स्वार्थ व्यवहारिक लोभ विशेष को जन्म देगा और आप आगे की कल्पना से सदा के लिये फिर से बेदखल हो जाओगे.....! अर्थात् ऊपर उठने के लिये निरन्तर प्रभु का चिन्तन चाहिये यानी के सम्बन्धित उपलब्ध प्रत्येक स्थिति में व्यवहारिक रूप से पूर्ण सृष्टि के प्रति अनुकूल विशेष हो कर पूर्ण ईमानदारी से उपलब्ध प्रकृति विशेष अनुसार मर्यादित विशेष रहना तथा उसी के लिये कार्यशील चिन्तित विशेष रहना सफलता की कुंजी है । जैसे नीचे गिरने के लिये स्वयं के अहम विशेष का लगातार व्यवहारिक चिन्तन आवश्यक है तो उठने के लिये प्रभु की **“कामी”** वासना विशेष आवश्यक है निरन्तर व्यवहारिक चिन्तन विशेष के रूप में.....! और यह कार्य केवल स्वयं जीव विशेष ही करने में घोर समर्थ विशेष है व्यवहारिक रूप से जिस में साथ देती है प्रभु की प्रत्यक्ष की हुई वैधानिक आवश्यक विधि विशेष स्वयं की निजी समर्थ आवश्यक सोच विशेष के रूप में.....! अब स्वयं विचारो नाम अमृत इत्यादि और कर्मकाण्डों विशेषों का क्या और कितना योगदान विशेष हो सकता है ? आप की इस स्वयं की समर्थ सोच के **“उत्थान और पतन”** में निरन्तर अनन्त युगों विशेषों का दुर्लभ

आवश्यक समय विशेष लगता है यकीनी तौर पर । उस तरह से लगातार ऊपर से जीव नीचे और नीचे से जीव ऊपर की ओर बढ़ता सृष्टि चक्र विशेष का निर्माण करता है केवल स्वयं की ही समर्थ सोच विशेष से आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से.....! जिस तरह से नीचे बढ़ता हुआ जीव मन से बंध जाता है आवश्यक रूप से, उसी तरह से ऊपर बढ़ता हुआ जीव उस बन्धन विशेष से छूट जाता है प्राकृतिक रूप से आवश्यकता अनुसार विधि के वैधानिक विचार के अनुरूप केवल स्वयं के ही निजी आवश्यक प्रयास हेतू साथ होती है तो केवल प्रभु की निज क्षमता विशेष जो प्रत्यक्ष कर निरन्तर धारण किये रहती है जीव के प्रत्येक सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार के हर एक कण विशेष को वैधानिक विचारिक रूप से.....! एक बात गाँठ बाँध ले जब भी करना है जो कुछ भी करना है केवल तुझे ही करना है और साथ केवल वही है जिस ने तुझे केवल बनाया ही नहीं बल्कि निरन्तर धारण विशेष भी किया हुआ है । अब तेरी स्वयं की ही निजी मर्जी विशेष है कि ये शुभ अथवा अशुभ कार्य विशेष कब शुरू करना है साथ रहने वाला तो केवल तेरा मुँह देख रहा है कि कब तू इशारा करे और वो तुझे उठा कर के चल दे फिर तू है कि झांक-झांक कर देख रहा है कि कोई आयेगा.....? वगैरह-वगैरह.....! मन और आत्मा जिस आवरण विशेष में रहते हैं उस के पोषण हेतू अन्न अथवा साधनों विशेषों की आवश्यकता होती है जिस के लिये विशेष साधन यानी के

कमाई विशेष की आवश्यकता पड़ती है अब कमाई मर्यादित है या अमर्यादित ये तेरा स्वयं का ही निजी फैसला विशेष है अपने स्वयं के ही अंदर झांक विशेष कर देख ले सब जवाब प्रत्यक्ष उपलब्ध हैं.....! आत्मा और संसार अथवा प्रभु के मध्य मन विशेष है मर्यादा प्रभु का निश्चित चरित्रक नाम विशेष है तो अमर्यादा निचले मण्डलों विशेषों का घोर वैचारिक दुर्लभ नाम विशेष है प्रत्येक फैसला प्रत्येक जीव ने अपने ही मन रूपी कलम विशेष से ही लिखना है जिस का हित अथवा अहित प्रत्येक लिखने वाले जीव की निजी दुर्लभ आवश्यक वसीयत विशेष है जिसे अनन्त काल से आगे अनन्त काल तक केवल और केवल तुझ महान दुर्लभ जीव ने ही भोगना विशेष है अनन्ता अनन्त मण्डल विशेष केवल और केवल तेरा ही मुँह देख रहे हैं क्योंकि तेरे बिना समर्थ रचना विशेष कोई अर्थ नहीं रखती केवल और केवल तेरी स्वयं की निजी सोच विशेष ही इन मण्डलों विशेषों को रोशन विशेष कर सकती है आवश्यक रूप से.....! कोई भी कार्य लोभ अथवा स्वार्थ के बिना सम्भव नहीं है फिर यह किस का कितना रखना और करना है ये तुझे स्वयं ही निश्चित करना है । ऐसे लोभ का क्या लाभ जो घोर नकों में तड़पने विशेष के लिये विवश कर दे.....! ऐसे स्वार्थ को क्या कहें जो दिन रात चिन्ता में घोल कर रोग का ढेरा विशेष बना दें.....! अतः अन्न और मन को एक ही जान अपने ही निज कल्याण हेतु तुरन्त प्रयत्नशील हो जाओ.....!

9. “मन अंधा-नाउ सुजान” अर्थात मन, आत्मा को उस मुल्क में आवश्यक साधन विशेष के रूप में मिला था आप ने इसे जगत में दलाली के धंधे विशेष में लगा दिया अनन्त काल से अनन्ता अनन्त जन्मों विशेषों में इस ने इतनी महारत विशेष हासिल कर ली है अपने इस पेशे विशेष में कि इस की हस्ती आत्मा से भी ऊँची हो गई है इस की मांग इतनी उच्च और महान हो गई है कि आत्मा के स्थान पर अब यही जज विशेष बन कर सभी धन्धों यहाँ तक की आत्मा का भी फैसला विशेष-विशेष करने के लिये निर्धारित विशेष कर दिया गया है और आत्मा को तो इस ने अपने यहाँ नौकर विशेष ही रख लिया है केवल गुलामी करने हेतू.....! कुछ भी कार्य करना हो आत्मा विशेष को मन से ही हुकम विशेष लिया जाता है मन के मना करने पर कुछ भी हो आत्मा में उस के खिलाफ विचार तक करने की भी स्थिति नहीं है.....! फिर अपने लाभ के लिये कौन सा कार्य विशेष करे....कैसे करे किस से मदद मागे.....! बिना मन के साथ दिये कुछ भी इस जगत में कमाना आत्मा विशेष के लिये केवल दुर्लभ असम्भव विशेष ही है प्रत्येक काल में.....! अब अनन्त काल से दलाली करते-करते इस दल्ले विशेष से आत्मा को केवल दलाली की ही झूठन विशेष-विशेष प्राप्त होती है फिर स्वयं के निज कल्याण हेतू किस की शरण विशेष प्राप्त करें.....? इसी स्थिति विशेष के लिये ऋषियों ने लिख कर दिया है “ग्रह प्रभ शरणाई” एक परमात्मा विशेष की ही

शरण के आत्मा के पास कोई मार्ग अथवा उपाय शेष नहीं रह जाता । अनन्त काल से निरन्तर अमली विशेष बनी हुई आवश्यक वस्तु विशेष को अपनाने योग्य बनाने के लिये भी बहुत लम्बे समय आवश्यक विशेष की आवश्यकता है अर्थात् आप को पहले स्वयं को सुधारना विशेष होगा यानी के ये जो आप ने प्रत्येक कार्य में, मुझे क्या मिलेगा.....? वाली निकृष्ट दल्लों की जो सोच विशेष बना रखी है उसे सख्ती से सृष्टि के अनुसार उस के आवश्यक भौतिक स्वरूप विशेष के अनुरूप स्वयं आप को ही ढालना विशेष होगा केवल स्वयं निज के ही कल्याण हेतू.....! लम्बे समय तक लगातार इस सोच विशेष को पूरी ईमानदारी से व्यवहारी विशेष बनाने के लिये निरन्तर कार्यशील विशेष रहना पड़ेगा तथा संगत भी केवल ऐसे ही व्यवहारी सोच विशेष रखने वाली आत्माओं विशेषों का सामाजिक रसूख विशेष भुला कर करना ही “पूरी ईमानदारी से” अत्यन्त लाभकारी विशेष होता है नकली व्यवहारी सोच वाली मुखौटाधारी आत्माओं विशेषों से अधिक परहेज की आवश्यकता है सावधानी के तौर पर । दूसरा आप की दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष तौर पर पूरी तरह से “छल रहित” सृष्टि के सभी जीवों तथा साधनों विशेषों के पूर्णतया अनुरूप विशेष होनी चाहिए तभी उपलब्ध आवश्यक पोषण विशेष आप के मन विशेष को सीधी दुर्लभ आवश्यक गती विशेष प्रदान करेगा प्रत्यक्ष आवश्यक व्यवहारी रूप से कल्याणकारी सोच

विशेष के रूप में.....! अधिक प्रत्यक्ष कमाये हुये साधनों विशेषों को वापस सभी शेष प्राणियों के लिये प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कराना आवश्यक रूप से केवल आप स्वयं के लिये ही अधिक उत्तम विशेष लाभकारी है प्रत्येक रूहानी मण्डल विशेष में आवश्यक तौर से.....! संजो विशेष कर रखना सृष्टि और आप स्वयं के लिये भी केवल और केवल पतनकारी है विशेष रूप से । ग्लोबल वार्मिंग इसी संजोजन विशेष का ही नतीजा विशेष है । जब तक आत्मा अपनी व्यवहारिक सोच विशेष को पूरी सृष्टि के सभी जीवों सहित के पूरी तरह से आवश्यक अनुकूल विशेष नहीं बनाती व्यवहारी रूप से उस समस्या विशेष का कोई हल नहीं है सभी ढोल व्यर्थ के केवल बाहरी सतह को पीटना मात्र है । जैसे-जैसे प्रत्येक आत्मा नैगटिव व्यवहारी सोच विशेष को धारण करती हुई जहर विशेष उगलती है सृष्टि का आधारभूतिक दुर्लभ आवश्यक **“सत्व विशेष”** सिमटता जाता है जिस से सृष्टि के बहुत से आवश्यक अंगों विशेषों में अभाव विशेष उत्पन्न होने लगता है और सृष्टि विनाश की ओर बढ़ती है इसी सफर को सत से कल का दौरा विशेष कहा जाता है और इस का मुख्य आधारभूतिक कारण प्रत्येक आत्मा की मर्यादाहीनता ही जिम्मेदार विशेष होती है इस में कोई यू टर्न नहीं होता इसे अच्छे तरह से गाँठ बाँध लो । कल से सतयुग कभी नहीं होता.....! अर्थात् किया हुआ कभी भी नहीं बदलता बल्कि उसे तो विद इंटरैस्ट पूरा का पूरा भुगतना

विशेष ही पड़ता है सभी आवश्यक-आवश्यक चालाकियों सहित प्रत्येक काल में आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से वैधानिक तौर पर.....! जब प्रत्येक आत्मा के अनन्त जन्मों विशेषों का हिसाब विशेष अधिक जमा होने लगता है और आपसी “लेन-देन” में दोनों पक्षों का विशेष तौर पर दूसरी जूनों अथवा स्थानों विशेषों पर होने के कारण अभाव विशेष होने पर यह जिम्मेदारी सृष्टि की विधि विशेष वैधानिक तौर पर स्वयं ही अपने हाथ विशेष में ले लेती है और आवश्यक व्यवहारिक सोच विशेष को उल्टा विशेष कर के आवश्यकता अनुसार आवश्यक तौर पर विद इंटरैस्ट वापस विशेष ले कर अभाव विशेष-विशेष उपस्थित विशेष करती है तो सीधा विशेष कर के सम्बन्धित जीव की आवश्यक व्यवहारिक सोच विशेष को ब्याज सहित मुआवजा विशेष-विशेष व्यवहारिक तौर पर प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष कराती है निरन्तर पक्षपात रहित किसी भी सवेदना विशेष से रहित वैधानिक व्यवहारिक रूप से प्रत्येक काल विशेष में अनन्त काल विशेष के बाद भी बिना किसी भी बाधा विशेष के यकीनी तौर पर । इस से बचना मूर्ख विद्वानों विशेषों की मीठी सी निकृष्ट कल्पना विशेष है । सृष्टि में सभी प्रकार के टकराव विशेष-विशेष-जीवों विशेषों सहित रोग अभाव विशेष-विशेष इत्यादि उसी “लेन-देन” विशेष के व्यवहारिक पहलुओं विशेषों का ही भुगतान रूपी नतीजा विशेष-विशेष है आवश्यक रूप से विधि का “वैधानिक न्याय

विशेष” यकीनी तौर पर । शुरू में प्रजा की पालना राजा विशेष के रूप में की जाती है जो अनन्त काल का विशय रहित त्रिकालदर्शी तपस्वी दुर्लभ आवश्यक आत्मा विशेष होता है । धीरे-धीरे कुछ निजी कारणों तथा निजी लोभ-स्वार्थ के कारण दूषण विशेष उत्पन्न होने लगता है जो राज परिवार से बढ़ता हुआ सम्बन्धियों और फिर निजी नजदीकी राज कर्मचारियों विशेषों में भी प्रत्यक्ष विशेष होने लगता है फिर धीरे-धीरे उस की मात्रा विशेष “स्वार्थ रूपी लोभ” के तहत निरन्तर बढ़ने विशेष लगती है और बढ़ती हुई प्रजा विशेष में भी व्याप्त विशेष होने लगती है एक विशेष महामारी के रूप में फिर जब सभी के निजी स्वार्थ बहुत बढ़ विशेष जाता है तो सभी सृष्टि की आवश्यक मर्यादा विशेष को भुला कर सभी का केवल जन्म से ही एक सा अधिकार विशेष स्थापित करने के चक्कर में बगावत विशेष और फिर लोकतन्त्र की स्थापना विशेष कर स्वयं को धन्य विशेष मानने लगते हैं । लेकिन ये भूल जाते हैं कि घोर भ्रष्ट विशेष हो चुके राजा से फैली भ्रष्टाचार में पूरी तरह से डूब चुकी “प्रजा विशेष” से उत्पन्न “राज सत्ता विशेष” कैसे शिष्टाचार विशेष को जन्म दे कर प्रत्यक्ष विशेष कर सकती है.....? अर्थात् सभी आत्माओं के मर्यादा हीन यानी के भ्रष्ट विशेष हो जाने पर आप शिष्ट आत्मा का शिष्टाचार विशेष आखिर कहाँ से किन उपायों विशेषों से उत्पन्न कर सकने में समर्थ विशेष हो सकोगे यानी के लोक-तन्त्र इत्यादि केवल

एक पतनकारी आखिरी मीठा सा पढ़ाव विशेष है उस मिटने वाली सृष्टि में मनुष्य जाती जैसे दुर्लभ उच्च कोटि की एक आवश्यक भोगी जून विशेष का.....! मनुष्य जून सृष्टि में तभी तक सुरक्षित विशेष है जब तक राज-प्रजा में राजा पूर्ण तौर पर विशय विकार रहित तपस्वी सन्यासी विशेष हो व्यवहारिक रूप से निरन्तर प्रत्येक काल विशेष में और प्रजा भी उस के मार्ग दर्शन विशेष में पूर्णतया निरन्तर व्यवहारिक रूप से मर्यादित विशेष हो ! कल के इस आखिरी दौर में नीचे से ऊपर तक प्रत्येक जीव मर्यादाहीन केवल भ्रष्ट विशेष ही है और निरन्तर ज़हर विशेष कमाता हुआ केवल ज़हर विशेष ही उगल रहा है ताकी सब कुछ अच्छे तरह से स्वाद हो सके पूरी सृष्टि विशेष का प्रत्येक अंग विशेष.....! प्रत्यक्ष दौर विशेष में मीडिया जितना प्रभावकारी सिद्ध विशेष है यह उतना ही उल्टा भ्रष्टाचार का विशेष विकराल भ्रष्ट रूप विशेष धारण किये हुऐ केवल झूठ विशेष को ही सच्चा विशेष साबित करने में निरन्तर दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हैं.....! नट रूपी कंज्जर विशेष को मौजूदा काल में स्टार अर्थात कलाकार यानी के परमात्मा का बाप विशेष समझा जाता है और उस के स्पर्श-आटोग्राफ-तस्वीर इत्यादि को जीव मुक्ति विशेष का आवश्यक निश्चित फरमान विशेष जान कर जिन्दगी भर उन्हीं की “आराधना” विशेष से जो ये पल-पल तड़पता जीता-मरता उन्हीं की नकल विशेष में व्यर्थ अपना दुर्लभ अनमोल जन्म विशेष खोता चला जा रहा है ऐसे

कलाकारों विशेषों के मार्ग दर्शन विशेष में जो केवल अपने ही निजी रोल दुर्लभ आवश्यक विशेष को निभाने विशेष में पूरी तरह से घौर नाकाबिल विशेष साबित हुऐ हैं अर्थात ऐसे मनुष्य जो केवल मनुष्यता नाम की कमाई से विशेष रूप से रहित विशेष हैं यानी स्वयं साक्षरता विशेष-विशेष के अभाव विशेष में पीड़ित और बुद्धिजीवों विशेषों का मार्ग दर्शन विशेष अर्थात जजमेन्ट विशेष-विशेष करने में ही स्वयं को घौर निरन्तर व्यस्त विशेष किये हुऐ हैं ! ये भूल जाते हैं कि उस दौर में अभावत्रस्त जीव को मूर्ख बनाना तो बहुत ही आसान विशेष है पर उस के उपलब्ध नतीजे विशेष को भुगतना बहुत ही तड़पाने वाला घौर मुश्किल विशेष है क्योंकि किसी की हर जेरे विशेष पर घौर नियन्त्रित नज़र विशेष है प्रत्येक निश्चित काल विशेष में आवश्यक रूप से.....! एक बात जान ले चतुर कलाकार विशेष तू जिस **“साधन विशेष”** का नुमायंदा विशेष बन कर अपनी नट विद्या विशेष से जो भी प्रभावकारी स्थिति आवश्यक विशेष रूप से स्थापित करेगा उस का सृष्टि के सभी अंगों विशेषों पर प्राणियों सहित पर जो प्रभाव विशेष पड़ेगा केवल उसी से ही तेरा आवश्यक फैसला विशेष होगा विशेष रूप से.....! जब तक सम्बन्धित साधन विशेष तेरे उस प्रभाव का प्रयोग मनुष्य जाति विशेष सहित पूरी सृष्टि पर करता रहेगा आगे के अनन्त काल विशेष-विशेष तक तेरा आधिकारिक पारितोषिक हिस्सा विशेष दुर्लभ आवश्यक विशेष रूप से तेरे

निजी खाते विशेष में जमा विशेष होता रहेगा फिर तेरा सम्बन्धित आवश्यक **“दायरा विशेष”** भी इस हिस्से विशेष से अपना-अपना दुर्लभ आवश्यक आधिकारिक हिस्सा विशेष-विशेष प्राप्त करता रहेगा अनन्त काल विशेष तक निरन्तर ऐसा नहीं है कि तूने ऐक्ट किया और अपना कट ले कर अलग हो गया बस कॉन्ट्रैक्ट खत्म.....! तुझे तो चतुर प्राणी कलाकार विशेष-विशेष साबुन तेल इत्यादि जाधिये का ही व्यवहारिक आवश्यक सच विशेष-विशेष अनन्त काल तक के लिये नर्को घोर विशेषों में तड़पने के लिये मजबूर विशेष कर देगा अर्थात् जो जीव तुझे जानता भी नहीं उस ने भी तेरे इस महान कट विशेष के लिये हिस्सा विशेष दिया बाज़ार में वस्तु विशेष-विशेष को खरीदते समय यानी के तुम उस से भी खाने की कीमत विशेष ले रहे हो जिस ने खाने की थाली की शक्ल भी नहीं देखी व्यवहारिक रूप से.....! वाह रे नट मुबारक हो तेरी ये महान मार्गदर्शन रूपी देन महान मनुष्य जगत विशेष को...! पथ भ्रष्ट किया दुर्लभ मनुष्य जून विशेष को बोनस के रूप में सो अलग...! यह सब कैसे सम्भव हुआ उस मन विशेष के कारण उसे खुश रखने के चक्कर विशेष में तूने अपने लिये अपने ही हाथों फंदा विशेष तैयार कर लिया है अनन्त काल तक तड़पने हेतू.....! जब आत्मा विशेष अपना सर्वस्व खो बैठती है तो मनुष्य जन्म में अन्धी विशेष पैदा होती है अन्धी आत्मा विशेष की आँख मन विशेष फिर क्या और कैसे कहाँ तक देख सकेगी वैधानिक

तौर पर.....? फिर उस निपट अंधे मन विशेष के सुझाए हुए अधूरे अज्ञान विशेष को धारण कर व्यवहारिक रूप से आत्मा विशेष अपने को बहुत ही चतुर और ज्ञानवान विशेष स्थापित करती है अन्धे अभावग्रस्त अधूरे जगत संसार विशेष में.....! मन अंधा-नाउ का रूप आत्मा विशेष सुजान.....!

10. सत्यमेव ज्यते:- वचन विशेष लिख ढोल पीटने से यह सत्य विशेष साबित नहीं हो जाता व्यवहारिक रूप से.....! प्रत्येक सृष्टि विशेष एक आवश्यक आधारभूतिक विधान विशेष के तहत ⁶⁶ विधि विशेष ⁶⁷ द्वारा पूर्ण तौर से नियन्त्रित विशेष होती है आवश्यक रूप से बिना किसी भी सवेदना विशेष के.....! पलड़ा विशेष वही झुकता है जो भारी विशेष होता है जीत केवल और केवल कमाई विशेष की ही होती है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से कमाई विशेष के लिये प्रत्येक जीव के पास सदा ही आवश्यक विकल्प विशेष मौजूद रहते हैं किस तरह से कमाई विशेष करनी है अर्थात् मर्यादित रह कर अथवा अमर्यादित विशेष-विशेष से फिर उस उपलब्ध कमाई विशेष को किस तरह से कहाँ और कितना खर्च विशेष-विशेष करना है यह आवश्यक फैसला विशेष भी केवल स्वयं निजी तौर पर प्रत्येक आत्मा विशेष को स्वयं ही खूब सोच विचार कर के ही करना विशेष होता है सभी संभावित विकल्पों विशेषों को ध्यान में रख कर क्योंकि प्रत्येक फैसले विशेष का नतीजा विशेष-विशेष वैधानिक तौर पर विधि द्वारा पहले से ही

घौर निश्चित विशेष रहता है प्रत्येक काल में बिना किसी भी भेद-भाव तथा सवेदना विशेष के.....! इसीलिये जीव की स्वतंत्रता केवल “व्यवहारिक सोच” सोचने विशेष से पहले तक की ही है सृष्टि में मन-वचन-कर्म से कुछ भी व्यवहार विशेष प्रत्यक्ष हो जाने के बाद सम्बन्धित जीव विशेष केवल उस उपलब्धी विशेष का आवश्यक नतीजा विशेष पूरा-पूरा भुगताने विशेष के लिये पूर्ण तौर पर बाध्य विशेष है । उस में किसी भी कर्मकाण्ड विशेष-विशेष की दखल नहीं चलती जो कोई भी कमाई विशेष दखल विशेष करती है वो केवल समस्या विशेष को बढ़ा तथा गहरा विशेष बनाती है दोनों पक्षों विशेषों को भुगताने विशेष हेतू प्रत्येक काल में आवश्यक वैधानिक रूप से.....! “प्रत्येक स्वर्च विशेष” पूर्ण प्रत्यक्ष सृष्टि पर सभी दूसरे प्राणियों सहित मनुष्य पर विशेष तौर पर क्या प्रभाव विशेष डालता है प्रत्येक जीव का कमाया हुआ दुख अथवा सुख विशेष है जो अनन्त काल के बाद भी केवल उसे ही सम्बन्धित दुर्लभ-दुर्लभ आवश्यक साधनों विशेषों महानों सहित को अधिकार अनुसार पूरा का पूरा भुगताना विशेष होगा वैधानिक तौर पर प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से अनन्त काल विशेष के बाद भी.....! जीत विशेष केवल उसी आत्मा अथवा आत्माओं विशेषों की ही होती है प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से विधि के विधानुसार जिन के पास अधिक कमाई विशेष होती है उस फैसले आवश्यक का सुख अथवा दुख विशेष से कोई भी

सम्बन्ध विशेष नहीं होता सृष्टि के विरुद्ध किया गया खर्च विशेष ^{६६}जीत विशेष^{७७} के बावजूद भी केवल दुखों ही को न्यौता विशेष देता है तथा सृष्टि सहित सभी जीवों के अनुरूप किया गया खर्च विशेष सम्बन्धित जीव विशेष के लिये बहुत ही लाभकारी-सुखदायी विशेष साबित होता है प्रत्येक उपलब्ध स्थिति विशेष में भी प्रत्येक काल में वैधानिक तौर पर । काल विशेष में यह टकराव बहुत बढ़ विशेष जाता है कि अमर्यादित कमाई और सृष्टि के विरुद्ध किया गया खर्च विशेष भी जीव विशेष को साधनों सहित विशेष-विशेष सुखों को प्रत्यक्ष उपलब्ध अनुभव विशेष करवाता है.....! आधारभूतिक वैधानिक नतीजा विशेष प्रत्येक काल में निश्चित रहता है विरुद्ध खर्च में भी भारी कमाई विशेष विजय तो होती है परन्तु जो सुख साधन उपलब्ध विशेष होते हैं वो सम्बन्धित जीव विशेष के पूर्व जन्मों विशेषों में बड़े यत्नों विशेषों से कमाये हुऐ दुर्लभ कर्मों विशेषों का रिजर्व में रखा हुआ सुख-संसार रूपी आवश्यक नतीजा विशेष होता है जिसे विधि खामोश रह कर बड़ी ही चालाकी विशेष से उपलब्ध विशेष कराती रहती है प्रत्यक्ष आवश्यक कमाई विशेष के पूर्ण तौर पर खर्च विशेष हो जाने तक कमाई विशेष के खत्म होते ही यही विधि जो जय-जयकार के ढोल पीट रही थी बड़ी बेरहमी से बालों से पकड़ कर घसीट कर ले जाती है अमर्यादा का हिसाब विशेष-विशेष वसूलने.....! यही विधि का भ्रम रूपी धोखा विशेष है जिस पर जीव ध्यान दिये

बिना मर्यादाहीन हो आसान अमर्यादित विकल्पों विशेषों की ओर ही आकर्षित विशेष हो अपने लिये सदा के वास्ते केवल दुखों विशेषों का ही पहाड़ विशेष एकत्रित करता चला जाता है.....! प्रत्येक काल स्थिति विशेष में केवल राम अथवा सत्य विशेष की ही विजय होगी ऐसा कोई विधान नहीं है इसे अच्छी तरह से विचार लो । विजय केवल कमाई विशेष भारी की ही होगी प्रत्येक काल में.....! इसीलिये राम अथवा अर्जुन विशेष को भी काल तथा स्थिति विशेष में विजयी विशेष बनाने हेतू दूसरी कमाई वाली आत्माओं विशेषों ने अपनी-अपनी सम्बन्धित स्थिति रूपी वासनाओं रूपी कामनाओं की विशेष पूर्ति हेतू अपनी दुर्लभ निजी आवश्यक कमाई रूपी उपलब्ध साधनों विशेषों से सम्बन्धित सम्बन्धों विशेषों को योगदान विशेष-विशेष प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाया.....! कमाई तथा खर्च विशेष की भिन्नता के कारण ही समय विशेष सत से कल का प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष है वैधानिक तौर पर । परमात्मा भक्तों के वश है केवल मूर्खता का विचार विशेष है प्रभु वैधानिक तौर पर विधि के रूप में केवल दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष-विशेष के ही अधीन विशेष है प्रत्येक काल में कमाई खत्म अधीनता प्रभु की एक तरफ रही भक्त जी पानी की आवश्यक बूंद के लिये भी आप को केवल तड़पना विशेष ही पड़ेगा और उपलब्धी प्रभु की ओर से केवल मृत्यु ही प्रत्यक्ष विशेष होगी न की दुर्लभ आवश्यक पानी विशेष.....! अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाओ देख

लो केवल कमाई विशेष ही विजयी है न कि सत्य विशेष की.....!
मूर्ख घोर विशेष जज विशेष-विशेष बना बैठा है स्वयं के उपलब्ध
साधनों विशेषों से और अभावग्रस्त विशेष की कोई मजबूरी
“विचारहीन विशेष” हो सकती है जज विशेष की कौन सी
आवश्यकता है कि हाथ में कटोरा विशेष लिये भीख मांग रहा है
विशेष-विशेष दे दो और जमानत अथवा फैसला अपने पक्ष विशेष
में करवा लो प्रत्येक जीव अपने स्वयं के हाथों विशेषों से ही अपना
दुर्लभ आवश्यक भविष्य विशेष-विशेष लिखने में दुर्लभ घोर व्यस्त
विशेष हैं “निरन्तर” खूब सोच विचार कर फिर बताओ आप के
भविष्यवक्ता विशेष-विशेष करने का उस प्रभु रूपी वैधानिक विधि
विशेष आवश्यक को बदलने का विचार विशेष भी कैसे कर सकते
हैं.....? ये जो गद्धिधारियों विशेषों का आकर्षण विशेष दीख रहा
है असल में दूसरी न दीखने वाली आत्माओं विशेषों की कमाई
विशेष का प्रभाव विशेष है उन की स्वयं की ही निजी कामनाओं
विशेषों की पूर्ति हेतु किया गया आवश्यक खर्च विशेष.....! ये
आत्मायें पहले सम्बन्धित जीव के जीवन में अभाव विशेष-विशेष
रोग साधन इत्यादि विशेष के रूप में विशेष लक्षणों सहित अपनी
निजी दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष को खर्च कर के प्रत्यक्ष
करती हैं फिर उसे याचक बना कर अपनी सम्बन्धित नुमायदी
आत्मा विशेष के समक्ष आत्मसमर्पण करवा कर अपनी कमाई
विशेष से प्रत्यक्ष किया गया अभाव विशेष-विशेष मिटा देती है

और फिर इस का खूब ढोल विशेष-विशेष पीटा जाता है अपनी ही दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष को खर्च कर और बहुत से नये-नये अनुयायी विशेष-विशेष बना लिये जाते हैं केवल स्वयं की ही निजी विशेष-विशेष कामनाओं वासनाओं विशेषों की पूर्ति हेतू....! बाबा जी वगैरह-वगैरह अपने शिष्यों की करतूतों के बारे में कुछ नहीं जानते.....! ये बात आपको हजम नहीं होगी.....! जानते हैं तो फिर उन्हें रोकते क्यों नहीं.....! ये अनुयायी अमृत नाम इत्यादि का चोला विशेष पहन कर पहले से भी अधिक बड़ी मात्रा विशेष में निरंतरता जिन्दगी विभिन्न विशेष-विशेष रूपों में पूरे समाज का किसी न किसी तरह से बलात्कार विशेष-विशेष कर रहे हैं और महान-महान महानतनों विशेषों की शरण विशेष-विशेष इनके निरन्तर हौंसले विशेष बढ़ाने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हैं फिर ये मसीहा महान विशेष-विशेष छोटे को बड़ा अपराधी विशेष बनाने में ही दुर्लभ घोर समर्थ विशेष हैं कि सुधारने विशेष में, आप स्वयं की महान बुद्धि विशेष से विचारो.....! फिर दावा है कि एक जन्म में नहीं तो चार में तो मंजी पर डाल कर के ले जायेंगे.....! कैसा हराम का निकृष्ट कमीना प्रचार विशेष है ? क्या सृष्टि अन्धी है या प्रभु भी इन मसीहों जैसा कामी विशेष दौगला महान है.....? जिन सम्बन्धित बीत गयी आत्माओं विशेषों के नाम से ये स्थान-मत-धर्म विशेष-विशेष चलाये जाते हैं उन का कोई विचार प्रत्यक्ष स्थिति विशेष में प्रभाव विशेष नहीं रखता कारण केवल

प्रत्यक्ष आत्माओं की कमाई विशेष ही आप के कार्यों विशेषों को पूर्ण करने हेतू उपलब्ध विशेष होती है वैधानिक रूप से.....! बीत गई आत्माओं के घोर पोजिटिव कार्य विशेष भी सोच और स्थिति के बदलाव के कारण बदल कर एक दम से उल्टे पतनकारी विशेष साबित होने लगते हैं व्यवहारिक रूप से सम्बन्धित काल विशेष में आधारभूतिक आवश्यक-आवश्यक सात्विक अर्थ विशेष को छोड़ कर यकीनी तौर पर.....! दुर्लभ बाबा जी महान वगैरह-वगैरह अपनी दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष को आप के लाभ हेतू क्यों खर्च करेंगे कि आप सुधर जाओ.....! फिर खर्च किये बिना ये डेरे भी नहीं चलेंगे अर्थात् वो उतना ही खर्च विशेष करेंगे कि उन के निजी स्वयं के दुर्लभ कार्य विशेष-विशेष पूरे हों क्या ये केवल छोटी सी ही कामना या वासना विशेष है कि प्रभु के स्थान पर उन के नाम विशेष आराधे अथवा चलाये जायें.....! दूसरे के लाभ विशेष में ही स्वयं का भी बहुत बड़ा दुर्लभ सा आवश्यक लाभ विशेष निहित रहता है वैधानिक रूप से.....! उसी कारण कुछ आत्मायें स्थिति के अनुरूप आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अथवा कामना विशेष के तौर पर समाज में कल्याणकारी प्रभावी विशेष स्थिति हेतू अपनी दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष को खर्च विशेष करती है जो कलान्तर में विशेष मोड़ ले कर हित अथवा अधिकार केवल अहितकारी ही साबित विशेष होती है सृष्टि चक्र विशेष में.....! उन का किया हुआ अनावश्यक खर्च विशेष

निरन्तर घटता हुआ प्रत्यक्ष आत्माओं की कमाई और खर्च विशेष के प्रभाव से प्रभावहीन हो कर मिट विशेष जाता है फिर उन बीत गई आत्माओं विशेषों का सिजदा-प्रार्थना-मन्नतें इत्यादि वगैरह-वगैरह का क्या अर्थ विशेष है विचारो.....! ईसा-नानक-राम-रसूल वगैरह-वगैरह के जन्म के नाम पर खरबों का खर्च विशेष कर दिया जाता है रोज टनों फूल दुर्लभ आवश्यक सामग्री विशेष-विशेष चढ़ायी जाती है केवल इन्सान को भूखा विशेष रख कर पूरे समाज का रेप विशेष-विशेष कर के आप की इस अन्धी लोभी चाहत विशेष को कौन सा प्रभु विशेष कबूल कर रहा है.....? केवल नकों में दफन विशेष होने हेतू.....! जरा विचारो.....? ऐसा करने के लिये आप को कौन उकसा रहा है.....? केवल आप की निजी स्वार्थ रूपी दुर्लभ-दुर्लभ वासनायें विशेष-विशेष पेट यानी दुर्लभ-दुर्लभ कामनायें आवश्यक.....! गुरु तो लिख कर के बता रहा है कि **“कूड़ सुइना”** अर्थात् सोने का व्यापारी केवल कूड़ा एकत्र करने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष है यानी के कूड़े अर्थात् सोने का धंधा विशेष करने वाला सुनार कभी भी सिख नहीं बन सकता यानी के शिष्य के लिये लोभ की सीमा उचित रूप से आवश्यकता अनुसार आवश्यक विशेष है.....! उस पर अमली जामा विशेष पहनाने के बजाये गुरु को ही सोने के ढेर विशेष में दबाये विशेष जा रहा है आज का महान सिख विशेष.....! इतना प्रदर्शन व्यवहारी तो सुनार की दुकान पर भी सोने का नहीं होता.....! यहाँ तो गुरु

को ही सुनार का बाप विशेष बना दिया आज के महानतम सिख
अर्थात् शिष्य विशेष-विशेष नें और स्वयं को धन्य मानता धनवाद
करता गुब्बारे फोड़ हैप्पी बर्थ डे मनाने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त
विशेष हैं गुरुओं विशेषों महानों का.....! उस वचन विशेष पर और
कैसे थूका जायेगा ? “दिनस चढ़े फिर आथवे-रेन सभाई जाई ।
आंव घटे नर न बूझी-नित मूसा लाज टुकाई ।” जनेऊ से बचाया
तो गातरे वेश में फँस गये पढ़ने-रटने से बचाया तो सुनने-देखने
लफजों विशेषों में फँस गये महन्तों से बचाया तो लिखित को
सोने में मढ़ने लगे यानी के आप असल में पढ़ना अर्थात् सुधरना
ही नहीं चाहते फिर सुख की कौन सी कल्पना विशेष संजोये
सुपना विशेष-विशेष देख रहे हो.....! जागो और पहचानों ये रचना
कमाई और खर्च विशेष के आधारभूतिक वैधानिक विधान विशेष
से बंधी प्रभु रूप विधि विशेष द्वारा नियन्त्रित धारण विशेष की
हुई है निरन्तर.....! किसी भी आत्मा अथवा आत्माओं विशेष महानों
की व्यवहारिक कमाई दखल विशेष इसे मोड़ने अथवा पलटने
विशेष में केवल घोर असमर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में.....!
और प्रत्येक आंशिक समर्थ व्यवहारिक रुकावट विशेष भी केवल
घोर महान-महान दुखों विशेषों को ही न्यौता भर देना है.....!
मनुष्य जन्म के अर्थ विशेष को समझो और स्वयं को स्वयं ही
नियन्त्रित कर सृष्टि के अनुरूप अर्थात् मर्यादित विशेष कर अपने

आधार विशेष को केवल स्वयं में ही प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करो.....!

11. ऊपर सत्यमेव ज्यते की तखती विशेष लगा कर उस के नीचे प्रत्यक्ष झूठ अथवा छल विशेष को ही सच्चा साबित विशेष कर उन्हें सिजदा विशेष कर सैल्यूट विशेष किया जा रहा है जिन्हें नाड़ा विशेष बांधने की भी तमीज विशेष नहीं है अर्थात केवल झूठ-छल का ही विशेष पुलिन्दा मात्र हैं और प्रत्येक सम्भावित क्षेत्र विशेष में अभावग्रस्त-अधूरे-विकृत-विकासशील विशेष-विशेष हैं प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से.....! सामने सैल्यूट करने वाले कौन हैं **“असली”** स्वयं को मनुष्यता के लिये मिटा देने वाले श्रेणी विशेष के उत्तम-श्रेष्ठ बुद्धिजीवी विशेष.....! जिन के हाथों में मनुष्य की सुरक्षा विशेष सौंपी जानी चाहिये थी प्रत्यक्ष दौर विशेष में उन्हें निजी वासनाओं को पूरा करने का साधन विशेष बना दिया गया है केवल गुलाम विशेष के तौर पर अर्थात मूर्ख घोर विशेष बुद्धिजीवियों पर राज विशेष कर रहा है.....! यह निकृष्ट-कमीना अभाव का दौर धर्म और नीति दोनों पक्षों विशेषों में बड़े धड़ल्ले विशेष से चल रहा है प्रत्यक्ष व्यवहारिक रूप से । धर्म अथवा प्रभु के नाम विशेष-विशेष पर हर छोटे से छोटे क्षेत्र विशेष में दो-चार संत-गुरु-पातशाह-देवी-देवता-ब्रह्मजानी-महंत-फकीर-कमेटी वगैरह-वगैरह अपनी-अपनी विशेष-विशेष तख्त रूपी गद्धियाँ विशेष-विशेष लगाये-दुकानें विशेष-विशेष सजाये

बैठे हैं केवल मनुष्य विशेष का सृष्टि सहित रेप विशेष करने हेतू....! ये कोई नहीं विचारता कि आज फिर पिछले चिरकाल से से चला आ रहा ⁶⁶ और कितना ⁷⁷ बलात्कार विशेष हो गया है समाज के प्रत्येक आवश्यक अंग विशेष का व्यवहारिक रूप से मनुष्य विशेष सहित.....! उन्हीं महानतम-महान महानुभावों और उन के दुर्लभ दोगले परमात्मा विशेषों द्वारा.....! जहाँ-जहाँ जिस-जिस का बलात्कार विशेष हो रहा है.....तो क्या उस-उस ने प्रभु को याद विशेष नहीं किया.....! अनन्त काल घोर चीख-पुकार करने के बावजूद आप के इन महानतम-महान प्रभुओं दोगलों सहित महानुभावों ने कभी भी कोई आवश्यक दुर्लभ रक्षा विशेष नहीं की बल्कि कर्मकाण्ड रूपी पूजा विशेष दुर्लभ-दुर्लभ सामग्रियों सहित करवाने में ही निरन्तर दुर्लभ मग्न विशेष रहे.....! क्या तू अखबार नहीं पढ़ता या न्यूज नहीं सुनता....? शायद प्रभु के घर में भी केवल ही नहीं होगा.....! वरना प्रभु और आप की पुकार न सुने वो भी बलात्कार विशेष होने की.....! असल में तूने जिन्हें अपनी सुरक्षा विशेष के लिये चुना विशेष-विशेष है दरअसल वही सब से बड़े बलात्कारी दुर्लभ व्यापारी विशेष-विशेष हैं अपने-अपने सम्बन्धित हरामी विशेष-विशेष दोगले प्रभुओं सहित मनुष्य सहित पूरी सृष्टि विशेष के.....! पूरी सृष्टि विशेष सभी प्राणियों सहित निरन्तर अभावग्रस्त विशेष होती जा रही है मनुष्य जैसी श्रेष्ठ - उत्तम विशेष जून भी निरन्तर केवल भूखी-प्यासी तड़प विशेष रही है

और सभी परमात्मा विशेष-विशेष भंग विशेष-विशेष चढ़ाये सो विशेष रहे हैं अथवा दुर्लभ आवश्यक तीर्थ विशेषों पर भ्रमण विशेष करने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हैं.....! ये प्रत्यक्ष स्पष्ट सीधी सी बात न तो आप की समझ में आती है और न ही कुछ दिखाई देता है.....! बस स्वयं के ही खर्चे विशेष पर खुद को ही मुण्डवाने विशेष हेतु केवल लाईन विशेष को ही लम्बा विशेष बनाने में खुद को दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष किये हुऐ हो निरन्तर व्यवहारिक विशेष रूप से.....! **“भ्रम भूले अज्ञान अंधले, भ्रम-भ्रम फूल तौरावे । निरजिउ पूजह-मढ़ह सरेवहि, सभ विरथि घाल गवावे ।”** अर्थात् अज्ञानता के निपट गहन अन्धकार विशेष में डूबा जीव स्वयं के ही बनाये हुऐ भ्रमों विशेषों में उन फूलों सामग्रियों विशेषों को भ्रष्ट विशेष कर रहा है जो जहाँ खिले विशेष हैं वहीं उस प्रभु विशेष दुर्लभ को अर्पित समर्पित विशेष हैं.....! सृष्टि चक्र विशेष में प्रत्येक जर्रे विशेष की स्थिति आवश्यक आधारभूतिक ढाँचे विशेष के अनुसार निश्चित विशेष की गई है स्वयं प्रभु विशेष द्वारा । किसी की भी स्थिति विशेष को बदलना आधार से अलग करने जैसा है और यह जीव विशेष स्वयं के मन विशेष द्वारा निर्देशित विशेष है.....! फिर उस का प्रयोग कहाँ किया जा रहा है निरजीव पत्थरों-किताबों इत्यादि की पूजा अर्चना विशेष में अथवा कब्रों विशेषों पर चढ़ा कर व्यर्थ नष्ट विशेष किया जा रहा है मनुष्य जैसा उत्तम जीव अभावग्रस्त-नग्न मजबूर विशेष है और किताबों-

मूर्तियों-कब्रों विशेषों-विशेषों पर कीमती वस्त्र-चादरें विशेष-विशेष-सोने-हीरों आदि से मढ़ विशेष कर चढ़ायी जा रही हैं पूरे जगत-संसार विशेष-विशेष में निरन्तर केवल मनुष्य विशेष को और अधिक अभावग्रस्त अर्थात् भूखा विशेष रखने हेतू.....! फिर बढ़िया बात तो ये है कि इन सभी महानतम महान-महान स्थानों-कब्रों विशेष पर केवल प्रेत जून में फँसी दुर्लभ-दुर्लभ आत्मायें विशेष ही प्रत्यक्ष भ्रमों विशेषों में डूबी आप की दुर्लभ-दुर्लभ आस्थाओं विशेषों का लाभ विशेष उठाती केवल आप का ही मुँह विशेष चिढ़ा रही हैं और आप हो कि आप स्वयं का ही दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म विशेष खर्च कर सब कुछ गंवा स्वयं को दूसरों विशेषों पर श्रेष्ठ साबित विशेष करने में ही दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष हो.....! **“सभ विरथी घाल गवावे.....!”** मनुष्य जैसे अनमोल दुर्लभ आवश्यक जन्म विशेष का उससे बढ़िया सदुपयोग फिर भला और क्या हो सकता है आप स्वयं की नजर विशेष में हे मूर्ख-विद्वान दुर्लभ आत्मा विशेष.....! ये सभी धन्धे विशेष-विशेष आप स्वयं से ही आप ही के मन विशेष ने खुद आप के ही हाथों विशेषों से करवा विशेष लिये हैं और आप दोनों हाथों से अपना दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म विशेष इस मन विशेष पर लुटा-कुर्बान विशेष कर सदा के लिये नर्को घोर-घोर को रेशन रखने हेतू तैयार बैठे हो इस निकल चुके आवश्यक दुर्लभ नतीजे विशेष से जल्दी ही वाकिफ विशेष हो जाओ.....! दोष केवल आप

ही का अपना स्वयं का है जब आप स्वयं ही अज्ञानता के गहन अन्धकार विशेष में डूबे हो तो फिर मन कैसे सुजान विशेष हो सकता है.....! किताब विशेष-विशेष को सोने के पत्रों विशेषों पर लिख देने से आप को कौन सा कैसा लाभ विशेष हो जायेगा जरा विचारो.....! कभी किताब विशेष-विशेष मूर्ति भी बोली है.....! यह ज्ञान का विशय है जिस की मूर्ति विशेष-विशेष है उस के आधारभूतिक चरित्र विशेष को व्यवहारिक रूप से धारण विशेष करो जो मार्ग दर्शन किताब विशेष “प्रमाणिक” दुर्लभ में दर्ज विशेष हैं उस पर व्यवहारिक तौर पर पूरी ईमानदारी विशेष से “अमल विशेष” करो केवल स्वयं के ही निजी जीवन विशेष में बिना किसी भी दल्ले-दलाल विशेष-विशेष के.....! फिर देखो नतीजा अपने स्वयं के ही जीवन विशेष में.....! बिना साधन तथा प्राण शक्ति रूपी दुर्लभ आवश्यक पूँजी विशेष को खर्च विशेष किये आप संसार को अर्जित नहीं कर सकते फिर संसार का अर्थ तो चिंता तथा दुर्लभ-दुर्लभ रोग सहित “दुर्लभ आवश्यकता” विशेष ही तो है.....! फैसला आपका अपना स्वयं का केवल निजी ही है कि आप अपनी इस दुर्लभ आवश्यक पूँजी विशेष को कहाँ खर्च करना चाहते हैं.....! शायद प्रभु विशेष-विशेष पर अथवा अपने आधारभूतिक आधार विशेष पर.....! तो उसके लिये किसी भी सामग्री अथवा मंत्र-बाणी-स्थान विशेष-विशेष वगैरह-वगैरह की कोई भी आवश्यकता ही नहीं है.....! प्रभु अर्थात् अपने

आधारभूतिक आधार विशेष को आपने केवल स्वयं के ही रूप शरीर में बिना किसी भी परेशानी के प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करना है केवल अपनी सोच विशेष को प्रभु की प्रत्यक्ष उपलब्ध सृष्टि रूपी सोच विशेष के अनुरूप ढाल विशेष कर अर्थात् स्वयं को पूरी ईमानदारी विशेष से व्यवहारिक तौर पर मर्यादित विशेष कर के.....! केवल आप स्वयं का ही आवश्यक रूप विशेष सिवाय प्रभु विशेष के और कुछ भी नहीं है अर्थात् “अहं ब्राम्हस्मी” = यांनी के में अर्थात् आत्मा इस प्रत्यक्ष उपलब्ध सृष्टि चक्र विशेष में ब्रह्म अर्थात् प्रभु विशेष के और कुछ भी नहीं है....!

12. “ऐसा कम मूलै न कीजै-जित अन्त पच्छेताइये” अर्थात् ऐसी मेहनत मसक्कत, चालाकी-छल विशेष-विशेष का क्या लाभ कि नकों की भयानक आग विशेष में अनन्त काल विशेष तक के लिये बार-बार जल कर तड़पना विशेष-विशेष पड़े.....! धर्म तथा नीती विशेष-विशेष में प्रजा तथा अनुयायियों-दुखियों विशेष-विशेष से आप जो कुछ भी साधनों विशेषों रूपी जो समर्पण विशेष-विशेष कबूल-स्वीकार विशेष करते हो इस आसान सी दिखने वाली उपलब्धी विशेष-विशेष सामग्री विशेष पर जानकार सम्बन्धियों सहित खूब जुगाली विशेष-विशेष करते हो बहुत सरल सी लगती है परन्तु गाँठ बाँध लो इस उपलब्ध आसान सरल सी के एक छोटे से कण विशेष को भी आप की पूरी सत्ता विशेष हज्म विशेष करने में केवल घौर असंभव विशेष ही है अनन्त

काल विशेष में भी सभी **“चमत्कारी विशेष”** उपलब्ध साधनों विशेष-विशेष सहित उपलब्धी विशेष के रूप में.....! सभी स्थान-डेरे महान-महान विशेष-विशेष किस साधन विशेष से चलते हैं ? मेहनत-ईमानदारी को भूल जाओ सभी **“महान-महानतम चढ़ावा”** विशेष केवल छल-कपट विशेष रूप से मनुष्य तथा शेष सृष्टि विशेष के आवश्यक अंगों विशेषों का ही शोषण -बलात्कार तथा दुर्लभ मनुष्य चमड़ी विशेष को ही उतार कर कमाया विशेष हुआ होता है विशेष तौर पर....! आप के सभी अरदासों-प्रार्थनाओं तथा महान-महानतमों की घोर भयंकर दृष्टियाँ विशेष-विशेष मारने से भी इस **“चढ़ावे घोर विशेष-विशेष”** का एक छोटा सा कण भी अपने आधारभूत कमाई के स्वरूप विशेष को बदलने में केवल घोर असमर्थ विशेष ही हैं प्रत्येक काल में आवश्यक रूप से विधि के न्यायिक वैधानिक तौर पर.....! परमात्मा का इस सारे आडम्बर तथा चढ़ावे-सामग्री विशेष-विशेष इत्यादि से कोई दूर-दूर का भी विचारिक सम्बन्ध विशेष नहीं है.....! फिर चढ़ा हुआ अर्पित दुर्लभ-दुर्लभ भयानक पाप विशेष-पुण्य विशेष में कैसे बदल जायेगा.....! प्रसाद का अर्थ चढ़ा हुआ बलात्कार विशेष-विशेष पुण्य विशेष नहीं हो जाता गाँठ बाँध लो.....! इस पर जुगाली विशेष करने वाले चाहे रोजगारी विशेष-विशेष हों अथवा सहयोगी-सहकारी-सेवादार विशेष-विशेष हों केवल अपनी स्वयं की ही चमड़ी विशेष कोमल-महान-महान उतरवाने विशेष के

लिये तैयार रहो मालिश विशेष-विशेष करवाने की आप को छूट विशेष है इसलिये तेल विशेष का भी आवश्यक संग्रह विशेष करना शुरू कर दो केवल स्वयं के ही आवश्यक हित विशेष हेतू.....! जब प्रभु का उन सभी कर्म काण्डों धर्मों विशेषों तथा नीतियों विशेषों से कोई दूर का भी विचारिक सम्बन्ध विशेष ही नहीं है तो फिर इन्हें करने अथवा चलाने से क्या लाभ.....! केवल स्वयं विशेष के लिये ही दुखों विशेषों को आमन्त्रण विशेष-विशेष देना.....! न तो आप पीछे हटोगे और न ही ये सब छोड़ेंगे.....! क्योंकि गन्दगी विशेष-विशेष फैलाना आप का दुर्लभ खानदानी पेशा विशेष है प्रभु के नाम विशेष पर.....! इसलिये दूसरा समाधान है कि सभी चढ़ावे विशेष-विशेष को ^{६६}स्वयं की निजी ब्याज विशेष^{९९} रूपी आवश्यक निधि विशेष को मिला विशेष कर-समाज के अभावग्रस्त विशेष-विशेष अंगों विशेषों को पुष्ट विशेष बनाने हेतू प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया जाये ! न कि अनावश्यक प्रवचनों भण्डारों तथा दूसरों को प्रभावित विशेष-विशेष करने हेतू व्यर्थ के दिखावी कर्मकाण्डों-जलूसों-कीर्तनों इत्यादि वगैरह-वगैरह पर खर्च विशेष-विशेष किया जाये.....। अब जो इस चढ़ावे महान विशेष-विशेष को चढ़ाते विशेष हैं उन्हें भी जान लेना चाहिये कि प्रभु के नाम से किया गया कार्य केवल ब्याज को बढ़ाता है अर्थात् तेरा फैसला चढ़ा हुआ महान चढ़ावा विशेष नहीं करेगा बल्कि जो तूने चढ़ाया विशेष-विशेष है वो समाज विशेष में तूने किन-किन

सियाणतों-चालाकियों विशेषों से तथा छल-कपट इत्यादि विशेष-विशेष से कमाया है उस आधारभूतिक विधि के विधान आवश्यक विशेष के द्वारा होगा प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर गाँठ बाँध ले.....! चढ़ाया और अरदास विशेष-विशेष प्रार्थना-कर्मकाण्ड विशेष-विशेष किये और बस सब कुछ पलट विशेष गया पाप-पुण्य विशेष में.....! इस सुपने मीठे विशेष से जल्दी जाग मूर्ख चतुर सिआणे.....! बलात्कार छोटा सा विशेष भी बहुत बड़े ब्याज दुर्लभ आवश्यक विशेष सहित एक दिन अवश्य तेरे सामने प्रस्तुत विशेष होगा और केवल तुझे ही पूरा का पूरा हज़म विशेष करना होगा अर्थात् तेरा भी विशेष रूप से आवश्यक बलात्कार विशेष होगा “बढ़ कर” सभी सम्बन्धित आवश्यक साधनों सम्बन्धों विशेषों सहित अनन्त काल विशेष के बाद भी आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से न्यायिक तौर पर वैधानिक विधि विशेष द्वारा.....! “हक पराई” अर्थात् पराये अधिकार विशेष में प्रवेश अथवा दखल विशेष हिन्दू के लिये गाय और मुस्लिम के सुअर के हनन जैसा घोर भयानक पाप विशेष है फिर सरदार अथवा और दूसरे विशेष-विशेष ईसाई इत्यादि के लिये ये घोर हराम विशेष-विशेष कमाया हुआ हलाल विशेष कैसे हो सकता है.....! केवल प्रभु के नाम विशेष-विशेष पर कर्मकाण्ड रूपी दुर्लभ धार्मिक क्रियाएँ विशेष-विशेष करते सब कुछ कैसे पलट-बदल विशेष जायेगा मूर्ख चतुर सिआणें.....! “गुर-पीर हामा

ता भरे जे मुरदार न खाई” अर्थात ऐसे कमाई वाले जीव इस घौर कल विशेष में मिलने असम्भव ही हैं आज तो ऐसे दल्ले परमात्मा के बाप गुरु-पातशाह-सतगुरु विशेष महान-महान प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हैं जो केवल घौर हराम विशेष को स्वीकार विशेष ही नहीं करते बल्कि नाम-अमृत इत्यादि वगैरह-वगैरह की प्रत्यक्ष मोहर विशेष लगा कर आप को प्रभु के नाम पर और अधिक बढ़ कर भयानक से भयानक बलात्कार विशेष-विशेष करने के लिये समाज में खुले सांड विशेष के रूप में केवल “खुला विशेष” छोड़ देते हैं.....!

“मारण पाह हराम मह होई हलाल न जाई” अर्थात तूने गुरु-प्रभु इत्यादि को चढ़ावे विशेष-विशेष रूपी हिस्सा विशेष-विशेष दिया और फिर शेष बचा हुआ तेरा घौर पाप विशेष-विशेष पुण्य विशेष नहीं हो जायेगा ये निश्चित रूप से जान ले.....! “गली भिस्त न जाइये-छूटे सच कमाई” अर्थात सुख विशेष तक पहुँचने की गली यानी रास्ता तेरा सरल विशेष अपनाया हुआ आवश्यक विशेष “यह नहीं है” ये तो घौर नर्को विशेषों तक जाने का सुगम-आसान और सस्ता सा रास्ता विशेष है अगर छूटना अथवा बचना चाहता है तो उस का केवल एक ही उपाय अथवा रास्ता विशेष है अर्थात केवल सच आवश्यक विशेष की ही दुर्लभ “आवश्यक कमाई विशेष” कर प्रत्येक काल विशेष में पूरी ईमानदारी और लगन विशेष से यकीनी तौर पर.....! “गली कूड़ई-कूड़ो पल्ले पई” अर्थात

पाप रूपी धूल भरे रास्ते विशेष पर चलने से केवल धूल रूपी पाप विशेष का ही मिलन विशेष “समायोजन” होता है और फिर सफाई विशेष हेतु आवश्यक रूप से घौर नकों विशेषों का स्नान विशेष-विशेष अवश्य न चाहते हुऐ भी आवश्यक तौर पर करना विशेष ही पड़ता है प्रत्येक काल में.....! अर्थात् चढ़ावे के प्रत्येक स्वरूप विशेष के छोटे से छोटे कण विशेष का आधा हिस्सा सम्बन्धित प्रधानों-महानों-सतगुरुओं-महानतनों वगैरह-वगैरह और उन के दोगले प्रभु विशेषों के निजी खाते विशेष में जमा विशेष कर दिया जाता है और शेष आधे के आधे का दुर्लभ हिस्सा विशेष सभी सहयोगियों विशेषों-विशेषों महानों और अनुयायियों के निजी खाते में ट्रांसफर विशेष होता रहेगा जब तक ये धन्धे विशेष-विशेष समाज में किसी न किसी रूप में भी होते रहेंगे चिरकाल विशेष तक आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से विधि के वैधानिक विधान के अनुसार.....! व्यवहार तो एक तरफ रहा कमाये हुऐ प्रत्यक्ष व्यवहारिक सोच विशेष के एक छोटे से कण विशेष को भी उपलब्ध आवश्यक नतीजे विशेष के रूप में बदलना तो अलग रहा केवल हिलाया विशेष भी नहीं जा सकता फिर इन महान भविष्यवक्ताओं का क्या तथा कैसा प्रयोजन विशेष.....! तेरा स्वयं का महान आवश्यक विशेष भविष्य केवल तेरे स्वयं के ही हाथों विशेष में है पिछला आवश्यक भुगत विशेष रहा है और आगे का स्वयं ही अपने ही हाथों विशेष से “निरन्तर”

लिखने विशेष में दुर्लभ घोर व्यस्त विशेष है। अब तेरी इस आदत दुर्लभ विशेष का क्या इलाज है कि मिर्च विशेष-विशेष खानी भी जरूर है और फिर हाय-हाय भी करना है.....! समाज में कुछ कार्यों विशेषों को चमत्कार या प्रभु गिफ्ट की संज्ञा विशेष दे कर प्रचारित किया जाता है वो भी एक भ्रम रूपी धोखा विशेष ही है जैसे शरीर भेदन-हज्म विशेष करना ईलाज लाइलाज विशेष निरक्षरता का रूप कुछ विशेष-विशेष बताना विशेष-विशेष ढंग विशेष से चोकियाँ भरना इत्यादि वगैरह-वगैरह-केवल प्रत्यक्ष उपलब्ध ऐसी आत्माओं विशेषों का योगदान रूपी धंधा विशेष है जो किसी न किसी कारण किसी रूप से इन नुमायंदी मनुष्य जून में प्रत्यक्ष आत्माओं से विशेष वैधानिक आधिकारिक आवश्यक सम्बन्ध विशेष रखती हैं-लेकिन स्वयं प्रेत जून विशेष में “अदृश्य प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष” हैं । प्रेत जून का अर्थ कुछ भी कर सकना या जान सकना नहीं है जैसे मनुष्य जून में जीव केवल वही जानता अथवा कर सकता है जो उस ने प्रत्यक्ष देखा अथवा कमाया हुआ विशेष होता है उससे अलग अथवा और विशेष की कल्पना भी सार्थक सिद्ध नहीं होती व्यवहारिक रूप से वैसे ही प्रेत जून में भी प्रत्यक्ष जीव जब इस जगत विशेष में मनुष्य जून में था और उस ने जो कुछ भी देखा अथवा कमाया विशेष था केवल और केवल उसी की ही उसे जानकारी रूपी समर्था विशेष प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहती है तथा जिस चिरकाल विशेष से वो इस

जगत को प्रेत जून विशेष में विद्यमान विशेष हो कर अनुभव विशेष कर रहा है उसका भी उसे प्रत्यक्ष आवश्यक ज्ञान विशेष रहता है जिसका वो “अन्धी” मनुष्य जन्म में उपलब्ध आत्मा विशेष-विशेष को खामोशी से प्रभावित विशेष-विशेष करता रहता है अपनी उपलब्ध जानकारी रूपी समर्था विशेष-विशेष से एक कण विशेष से भी अधिक का ज्ञान उसमें घौर असमर्थ विशेष ही है यकीनी तौर पर.....! ये जूनी आत्मायें विशेष स्वयं का जरा सा भी आभास मात्र ता उम्र सम्बन्धित जीव विशेष-विशेष को नहीं होने देतीं लेकिन अपनी अधूरी वासनाओं विशेषों को पूरा करने हेतू इन्हें अवश्य प्रेरित विशेष करती रहती हैं निरन्तर व्यवहारिक रूप से जिसे सम्बन्धित जीव विशेष चमत्कार विशेष अथवा देवताओं-प्रभुओं विशेषों का कार्य विशेष-विशेष जान कर करता हुआ स्वयं को व्यवहारिक रूप से धन्य विशेष मानता रहता है और मनुष्य जन्म विशेष से हाथ धो सब कुछ लुटा विशेष कर इन्हीं प्रेत जूनों विशेषों में गिर कर फिर चिरकाल तक स्वयं भी आवश्यक रूप से भटकता विशेष रहता है.....! आप क्या चाहते हैं ये फैसला केवल आप ने ही स्वयं करना है एक बार कुछ कर दिया फिर उस किये हुए का एक जरा विशेष भी बदलने वाला नहीं है इस पर जितना जल्दी भरोसा करेगा प्राणी तुझे लाभ ही होगा यानी करने से पहले तुझे पूरी छूट विशेष है केवल अपने ही हित विशेष हेतू करने के बाद आवश्यक नतीजा विशेष निश्चित है

पहले से ही विधि के विधानुसार केवल भुगतने विशेष हेतू प्रत्येक काल विशेष में आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से केवल तेरी ही खातिर.....! अवश्य तेरा कहीं पर तो इन्तजार विशेष-विशेष हो ही रहा होगा तेरी महानता विशेष-विशेष को बड़े ही ध्यान से विचार विशेष कर विधि विशेष द्वारा.....!

13. “अन्तर-ज्योत-निरन्तर-वाणी “साचै साहिब” सिउ लिव लाई” अर्थात् साहिब जो केवल सच विशेष है यानी के तीनों कालों में प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष ही केवल सच लफज विशेष में समाने योग्य है । जो पहले भी था अब भी भरपूर धारण विशेष किये हुऐ आपको निरन्तर चला विशेष रहा है और आगे भी यही इसी तरह से भरपूर “नियन्त्रित” विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष होता रहेगा प्रमाणिक रूप से प्रत्येक काल विशेष में यकीनी तौर पर ही केवल सच विशेष है जिसकी सत्ता केवल स्वयं भूः अर्थात् केवल अपने आप विशेष से ही होती है “निरन्तर.....!” शैतान जैसी कोई कल्पना विशेष नहीं है किसी भी काल में बुद्धि जब मन के अधीन हो सृष्टि के विरुद्ध कार्य विशेष करती है तो सम्बन्धित आत्मा विशेष ही “शैतान” का करिश्मा विशेष होती है और जब बुद्धि विशेष आत्मा के अधीन हो मन विशेष सहित पूरी सृष्टि के अनुरूप प्रस्तुत विशेष होती है तो फिर यही आत्मा विशेष “परमात्मा” का रूप ही नहीं होती बल्कि प्रभु का बाप विशेष प्रचारित की जाती है प्रत्येक काल में व्यवहारिक रूप से.....! साहिब विशेष जो तीनों कालों में

प्रत्यक्ष व्यवहारिक अनुभव केवल “सच” विशेष है कैसे विचारा जा सकता है.....? बाणी विशेष द्वारा अर्थात् एक आवाज़ विशेष जो रागमई है यानी के एक ऐसा विलक्षण राग विशेष जिसमें से सुनहरी दुर्लभ निर्माणकारी ज्योति अर्थात् प्रकाश विशेष प्रत्यक्ष होता है “निरन्तर” बिना रुके प्रत्येक काल में जो केवल “मर्यादित आत्मा” विशेष अपने ही “अन्तर” में “केवल” अनुभव विशेष करती है “निरन्तर” मनुष्य शरीर में फिर बाहर भी उसे उस एक आवश्यक सच विशेष के सिवा और कुछ भी अनुभव ही नहीं होता है यकीनी तौर पर.....! सच विशेष को अनुभव करने का तथा उस एक तक पहुँचने का केवल यही एक स्वभाविक तथा प्रमाणिक आवश्यक दुर्लभ मार्ग विशेष है प्रत्येक स्थिति विशेष में आवश्यक रूप से शेष सभी कर्मकाण्ड रूपी व्यवहार वगैरह-वगैरह केवल मन की ही चालाकी से भरी चालें विशेष-विशेष हैं अर्थात् आत्मा के पतन का आवश्यक वैधानिक उपाय विशेष.....! लफ़्ज़ रूपी श्लोकों विशेषों को भी वगैरह-वगैरह बाणी विशेष-विशेष कहा जाता है परन्तु इन सभी महानतम महान बाणियों विशेषों का इस बाणी अर्थात् रागमई प्रकाशित आवाज़ विशेष से दूर-दूर का भी कोई सम्बन्ध ही नहीं है तकनीकी रूप से.....! सभी लफ़्ज़ केवल व्यवहार का एक आवश्यक माध्यम रूपी साधन विशेष हैं इस मृत लोक में इससे अधिक एक ज़रा भी विचार का केवल मूर्खता विशेष ही है पूरी तरह से डूबने हेतु प्रत्येक काल में.....! “रागमई

प्रकाशित आवाज़” रूपी बाणी उस सच अर्थात् “परम चेतन सत्ता” विशेष का अनन्त गुणों विशेषों में से केवल एक आवश्यक निर्माणकारी गुण विशेष ही है जो प्रत्यक्ष कर धारण विशेष कर निरन्तर चलाता हुआ हज्म विशेष करता जाता है ताकी दूसरी और निरन्तर पहले से बढ़ कर नवीन तथा आकर्षित रचना की सृष्टि उत्पन्न विशेष हो सके.....! उत्पत्ति विशेष-विशेष प्रत्येक एक वैधानिक आवश्यक ढाँचे विशेष में बंधी हुई “नियन्त्रित” विशेष रहती है स्वभाविक रूप से स्वचालित तरीके विशेष से अर्थात् उस में प्रत्यक्ष रूप से आवश्यक ऊर्जा विशेष पहले से ही निहित विद्यमान विशेष रहती है फिर उसमें किसी भी प्रकार के “दखल” रूपी प्रचार तक की कोई भी गुंजाइश ही नहीं रहती सभी कुछ प्रमाणिक पहले से ही सभी आवश्यक सम्भावित विकल्पों सहित को साधनों आवश्यकों को ध्यान में रख कर के ही प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष किया जाता है जरूरत होती है तो केवल मूक यानी के खामोश अवलोकन विशेष की यही सच विशेष केवल निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करता रहता है प्रत्येक काल में.....! पूरी सृष्टि इस “रागमई प्रकाशित आवाज़” विशेष के सिवा और कुछ भी नहीं है लेकिन इस की प्रस्तुति की विभिन्नता आत्मा को विभिन्न दिशाओं विशेषों में सोचने के लिये विभिन्न आयाम विशेष-विशेष प्रत्यक्ष अनुभव विशेष कराती हुई “भ्रमित” कर भ्रमों में डुबाने के लिये बहुत से दुर्लभ-दुर्लभ आकर्षणों विशेषों से भरे हुए मार्गों

विशेषों को प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष-विशेष करती रहती हैं
“निरन्तर.....!” इस उपलब्ध प्रत्यक्ष हुई मजबूर रूपी सोच विशेष
से बचने का मार्ग भी केवल प्रभु की “मन” रूपी शरण विशेष ही
है जो केवल और केवल आप के ही निज अन्तर विशेष में प्रत्यक्ष
निहित विशेष है निरन्तर प्रत्येक स्थिति रूपी काल विशेष में.....!
इसी “रागमई प्रकाशित आवाज़” विशेष को विभिन्न कालों में-
अलग-अलग स्थितियों में नाम - अमृत - बाणी - ज्ञान - कीर्तन
- कलमा - शब्द - गुरु - सतगुरु वगैरह-वगैरह से याद अथवा
प्रचारित विशेष-विशेष किया जाता है “केवल जानकारी” हेतु
लेकिन जिन्हें डूबने का शौक विशेष होता है उन्हें डुबाने वाले भी
अवश्य ही मिल जाते हैं प्रत्येक काल में व्यवहारिक रूप से
विभिन्न-विभिन्न सम्भावित आवश्यक दुर्लभ-दुर्लभ वेशों विशेषों में
आकर्षित नामों विशेषों को धारण विशेष-विशेष किये हुऐ एक
उस प्रभु के नाम विशेष की आढ़ में “केवल” स्वयं की ही निजी
वासनाओं दुर्लभों को पूरा करने हेतु.....! सभी महान-महान प्रसाद
- नाम - अमृत - गुरु - सतगुरु - मूर्ति वगैरह-वगैरह केवल
प्रस्तुत दुर्लभ आवश्यक प्रकृति विशेष के ही अंश विशेष-विशेष हैं
उस केवल एक “रागमई प्रकाशित आवाज़” विशेष के द्वारा प्रत्यक्ष
कर धारण विशेष-विशेष किये हुऐ प्रत्येक काल में.....! फिर
“उपलब्ध विशेष” महान-महान किन उपायों विशेषों से अपने ही
आधार मूल विशेष को उत्पन्न कर “बांटने” विशेष में वैचारिक रूप

से भी कैसे समर्थ विशेष हो सकती है.....? जरा विचारो मूर्ख विद्वानों विशेषों.....! सभी नाम केवल लफ़्ज़ विशेष सभी अमृत केवल जल विशेष सभी मूर्तियाँ केवल पत्थर तथा सभी गुरु-सतगुरु केवल प्रकृति के आवश्यक दुर्लभ तत्वों विशेषों की जमा-घटा विशेष-विशेष ही है पूरी उपलब्ध सृष्टि विशेष में प्रत्येक काल में.....! इन सभी की जरूरत सृष्टि में सभी जीवों को आवश्यकता अनुसार उपलब्ध प्रत्यक्ष स्थिति विशेष में आवश्यक दुर्लभ प्राण रूपी जीवन को जीने के हेतू होती है न कि “प्रभु रूपी वैचारिक अनुभूति हेतू.....!” आत्मा सृष्टि के विरुद्ध कमाये हुये प्रमाणिक नतीजों विशेषों के कारण “अज्ञानता” के अन्धकार विशेष में डूब जाती है और फिर भ्रमों विशेषों में फँस कर व्यवहारिक रूप से भटक विशेष कर अनन्त काल के लिये नकों विशेषों रूपी आदि योनियों विशेषों में दफन विशेष हो जाती है केवल स्वयं के ही कमाये हुये अंधे प्रमाणिक कार्यों विशेषों से.....! “पदार्थ” विशेष लफ़्ज़ आवश्यक पदार्थ विशेष नहीं होता तकनीकी रूप से अर्थात् पदार्थ लफ़्ज़ में पदार्थ विशेष-विशेष घुसा हुआ नहीं है और न ही उस से पदार्थ विशेष के आवश्यक अभाव विशेष-विशेष को वैचारिक रूप से भी “आंशिक तौर” पर पूरा ही नहीं किया जा सकता “प्रकृति” अनुसार यानि के “रोटी लफ़्ज़” विशेष आप का पेट भरना तो दूर रहा आप को वैचारिक आधार विशेष देने में भी केवल घोर असमर्थ विशेष ही रहेगा प्रत्येक काल में “प्राकृतिक

रूप से.....!" लफज विशेष-विशेष महानतम महान केवल जानकारी विशेष-विशेष का माध्यम रूपी आवश्यक साधन विशेष ही है और अमृत-सरोवर महान-महान केवल दूषित विशेष-विशेष जल मात्र ही हैं तथा सम्बन्धित तस्वीर मूर्ति विशेष-विशेष केवल आवश्यक ज्ञान रूपी साधन विशेष ही है इससे आगे एक क्षणिक विचार विशेष भी केवल "घोर अज्ञानता" की न खत्म होने वाली दुर्लभ अन्धकारमयी अन्धी घाटी विशेष ही है-जिसमें से निकलने का फिर कोई मार्ग शेष ही नहीं रहता.....! "परम चेतन सत्ता" विशेष को आप किसी भी लफज विशेष से पुकारो अथवा याद विशेष करो कोई फर्क नहीं पड़ता "वो सुनता है" नतीजा तो केवल आप के ही निजी व्यवहारिक सोच विशेष से ही निकलता है प्रत्येक काल में वैधानिक तौर पर किसी भी लफज-श्लोक को रटने-गाने-ब्यान विशेष-विशेष करने या शक्लें महान-महान देखने से कुछ भी नतीजा निकला अर्थात् कमाया हुआ व्यवहारिक रूप से आंशिक तौर पर भी बदलने वाला नहीं है "हे विद्वान" महान विशेष-विशेष "आत्मा" दुर्लभ.....! इस दुर्लभ जानकारी विशेष से अपने शब्दकोश आवश्यक को अवश्य व्यवहारिक कार्यशील विशेष बना जितना जल्दी हो सके केवल निज के ही लाभ विशेष हेतू.....! काल-अकाल-सृजन-आकार-निरंकार-साध-गोविन्द-कृष्ण -हिमदेव-माधव-राम-बलराम-सृजनहार-कलाकार-ऋषभ "ज्योति निरंजन-ओंकार-रारंगकार-सोहं-सतनाम" ब्रह्म-

पालनहार-कल्याणकारी-बड़ा- शिव-महान- विष्णु इत्यादि गुरु-
सतगुरु वगैरह-वगैरह केवल लफज़ विशेष ही हैं उसकी आवश्यक
जानकारी विशेष हेतू नाम विशेष अर्थात् **“रागमई प्रकाशित
आवाज़”** विशेष उन लफज़ों विशेषों में घुसी हुई नहीं है.....! आप
किसी भी और अपने मन पसन्द लफज़ विशेष से उसे पुकारें
अथवा याद करें वो आप के विचार विशेष करने से भी पहले ही
केवल आप विशेष का ही ध्यान विशेष रखने करने में **“निरन्तर”**
मग्न विशेष है **“निरन्तर प्रत्येक काल”** में वो तो लगातार आप का
ही मुँह विशेष देख रहा है आप की ही प्रत्येक दुर्लभ-दुर्लभ
आवश्यक इच्छाओं विशेषों को पूरा करने हेतू सदा से ही निरन्तर
दृढ़ संकल्प विशेष है.....! इसी कारण विशेष हेतू वो निठल्ला-वेला
पूरा का पूरा प्रत्येक काल में **“निरन्तर”** व्यवहारिक रूप से केवल
आप विशेष के लिये ही उपलब्ध प्रत्यक्ष प्रस्तुत विशेष हैं.....! जल-
पत्थर-तस्वीर-लफज़ों इत्यादि के जरिये उस एक आवश्यक सच
विशेष को बांटने अथवा लेने-देने या स्वीकार करने जैसी कोई
भी **“तकनीकी”** वैचारिक कल्पना भी नहीं है अगर है तो केवल
वैधानिक प्रमाणिक बेवकूफी विशेष.....! जिसे महान से महानतम
मूर्ख विशेष-विशेष बांटने और स्वीकार करने में ही स्वयं को धन्य
विशेष-विशेष मान कर केवल डूबने विशेष में ही दुर्लभ घौर व्यस्त
विशेष हैं निरन्तर.....! सृष्टि में आवश्यक ऊर्जा विशेष के रूप में
यह नाम अमृत रूपी **“रागमई प्रकाशित आवाज़”** विशेष निरन्तर

“भरपूर” प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहती है न तो इसका एक कण भी कम हुआ कोई प्रत्यक्ष विशेष कर सकता है और न ही इसका एक वैचारिक कण विशेष भी कोई “धारण” विशेष स्वीकार करने में समर्थ विशेष हो सकता है इस तकनीकी पहलू विशेष को स्वीकार कर शीघ्र गाँठ बाँध लो.....! यानि के प्रत्यक्ष काल में वो “निरन्तर-भरपूर” प्रत्यक्ष उपलब्ध सम्पन्न विद्यमान विशेष है अर्थात् प्रत्येक सोच विशेष का व्यवहारिक कण सिवाय इस “रागमई प्रकाशित आवाज़” विशेष के और कुछ भी नहीं है “वैचारिक तौर पर”.....!

14. “ज्ञान” न गल्ली ठूँडिये-कथना करड़ा सार-अर्थात् ज्ञान जैसी चीज़ दुर्लभ आवश्यक विशेष “गल्ली” यानि के लफ़्ज़ रूपी बातों विशेषों श्लोकों इत्यादि साधनों अथवा संसारिक रास्तों रूपी गलियों विशेषों में प्राप्त होना केवल घोर असम्भव विशेष ही नहीं है तकनीकी रूप से बल्कि आवश्यक मनुष्य जन्म दुर्लभ विशेष का फिज़ूल खर्च कर सदा के लिये खो देना बहुत बड़े घाटे का सौदा विशेष है आत्मा की “मन” रूपी चालाकियों विशेषों का “निरन्तर”.....! “रागमई प्रकाशित आवाज़” अर्थात् “न” एक ऐसा आधारभूतिक तत्व रूपी “सत्व” विशेष सदा निश्चित नित्य सत्य विशेष है जिसे कथना करड़ा सार यानि के जवाब रूपी इन्द्रियों इत्यादि से ब्यान किया अथवा दर्शाया नहीं जा सकता इस सार नित्य तत्व रूपी विधि के वैधानिक प्राकृतिक आवश्यक चक्र

विशेष को.....! लेकिन आत्मा में आधारभूतिक आवश्यक क्षमता विशेष होती है अपने इस नित्य आधार विशेष को निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने की.....! इसके लिये उसे किसी का भी मुँह देखने की कोई आवश्यकता ही नहीं है । शारीरिक अंगों विशेषों के अभाव में ज़िन्दगी अवश्य ही मुश्किल भरी तो हो सकती है लेकिन अपनी इस जन्मसिद्ध आधिकारिक क्षमता “मनुष्य जन्म दुर्लभ” विशेष में प्रत्यक्ष विशेष हो जाने के बाद प्रत्येक सम्बन्धित आत्मा विशेष को अपने निज कल्याण हेतु आगे ऊपर के मण्डलों की ओर बढ़ने की अथवा प्रभु रूपी आधार-भूतिक दुर्लभ आवश्यक सार रूपी नित्य तत्व विशेष को प्रत्यक्ष निरन्तर अनुभव विशेष करने का प्रमाणिक दुर्लभ आवश्यक अधिकार विशेष- “प्रत्यक्ष” उपलब्ध विशेष हो जाता है उसके अपने आधारभूतिक प्रभु परमेश्वर द्वारा.....! ये आवश्यक अधिकार विशेष तब तक पूर्ण सुरक्षित विशेष है जब तक उसकी अपनी प्राण शक्ति निरन्तर उसे जीवन प्रदान कर रही है अर्थात् तुझे अपनी मंजिल को प्राण खत्म विशेष हो जाने से पहले ही “अवश्य” प्राप्त विशेष कर लेना है । यदि एक कदम भी शेष रहा तो “अगला जन्म” निश्चित है “व्यवहारिक सोच” अनुसार कमाया हुआ विशेष तौर पर यानि के “महान कोई भी” तुझे एक प्राण भी देने में केवल घोर असमर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में चाहे तू उसके सामने तीनों लोकों की समस्त सम्पत्ति महान विशेष ही क्यों न सजा कर रख दे.....! अब

तू स्वयं ही विचार ले कि इतनी दुर्लभ आवश्यक कीमती प्राण रूपी पूँजी विशेष को तू निरन्तर कहाँ और किस पर कितना खर्च विशेष करने में ही लगातार घौर व्यस्त विशेष है और फिर बदले में तू क्या एकत्र विशेष-विशेष महान कर रहा है.....? जो जीते जी यहाँ ही तेरा साथ छोड़ देता है तो फिर अगले मण्डलों विशेषों में कैसे तेरा आवश्यक साथ विशेष निभायेगा.....? प्रत्येक फैसला निरन्तर तेरा स्वयं का ही निजी दुर्लभ आवश्यक कमाया हुआ विशेष है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर.....! शारीरिक अपंगता का अर्थ है कि पीछे कुछ मर्यादाहीनता कमाई है सम्बन्धित आत्मा विशेष ने जिसका जुर्माना वैधानिक तौर पर विधि वसूल कर रही है लेकिन कुछ ऐसा किया है कि मुआवजा रूपी दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म उपलब्ध प्रत्यक्ष विशेष हुआ है फिर अपने दुर्लभ आधार को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने के लिये तुझे किसी भी महान दल्ले विशेष से मोहर विशेष-विशेष लगवाने की आवश्यकता कैसे पड़ गई.....? आत्मा के इस निजी दुर्लभ आवश्यक सफर विशेष के लिये शरीर की आवश्यकता है अंगों विशेषों के अभाव से उसे कोई परेशानी अथवा रुकावट विशेष नहीं है ! यह गली रूपी रास्ता विशेष उसके अपने ही शरीर में कण्ठ चक्र विशेष से ऊपर आज्ञा चक्र विशेष में है जो बहुत ही संकरा विशेष है जहाँ से केवल बारीक अर्थात् मर्यादित आत्मा विशेष ही निकल सकती है कोई भी घूसखोरी अथवा शिफारशी

“मन विशेषों” के महान-महान साधनों का कोई भी योगदान विशेष नहीं है.....! यह सारी कार्य प्रणाली स्वभाविक रूप से घौर नियन्त्रित मर्यादित विशेष है अर्थात् सब कुछ तेरे स्वयं के ही हाथ में निश्चित घौर सरल विशेष है आवश्यक रूप से.....! यानि के स्वयं को संसार रूपी “इन्द्रियों” के जाल से सीमित विशेष कर “गुजारे मात्र” तक के लिये रखता हुआ निरन्तर स्वयं को निकालता विशेष चल और अपनी उपलब्ध सारी आवश्यक क्षमता “प्रत्यक्ष साधनों विशेषों” सहित को “स्वर्च विशेष” कर उस दुर्लभ आवश्यक गली विशेष की ओर बढ़ जिसके लिये तुझे ये दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म विशेष प्राप्त हुआ है “निरन्तर.....!” प्रत्येक आत्मा को ये आवश्यक कार्य विशेष स्वयं ही करना है ये तेरी स्वयं की मर्जी विशेष है कि तुझे उसे कब शुरू करना है और कैसे करना है तथा कितनी जल्दी विशेष तुझे अपने आखरी पड़ाव विशेष तक पहुँचना है क्योंकि प्राणशक्ति तो निरन्तर घटती ही “विशेष” जा रही है और तू है कि रंग-तमाशे में ही घौर व्यस्त “केवल” हैप्पी डे-बर्थ वगैरह-वगैरह मनाने में घौर व्यस्त ताली पीटता हुआ नाचने-कूदने में ही निरन्तर डूबता विशेष चला जा रहा है.....! एक लाभ अवश्य है ये ताली पीटने-कूदने नाचने का अभ्यास तुझे आगे अपनी स्वयं की ही छाती पीटने और भयानक-भयानक कीलों से भरे आग के दरिया पार करने में तुझे अवश्य ही बहुत-बहुत सहायक विशेष होंगें.....! मुबारक हो चतुर प्राणी

तेरी ये दुर्लभ-दुर्लभ अभ्यास भरी दास्तान विशेष.....! तेरे इस दुर्लभ आवश्यक सफर विशेष में अगर कोई तेरे साथ है तो केवल तेरा स्वयं का अपना आधार विशेष जिसने तुझे केवल प्रत्यक्ष ही नहीं किया बल्कि “निरन्तर” तुझे धारण विशेष भी किया हुआ है जो एक दम से खाली केवल तेरी ही खातिर तेरा मुँह विशेष देख रहा है केवल तेरे ही निजी हित के लिये “दृढ़ संकल्प” विशेष किये हुऐ मिट विशेष रहा है “निरन्तर” और तू है कि व्यर्थ की महान-महान आशाओं विशेषों में अपनी दुर्लभ आवश्यक हस्ती विशेष को लगातार ही घौर नष्ट विशेष किये जा रहा है.....! इस सफर की आवश्यक विशेष खर्च रूपी पूँजी है “मन विशेष” जिसका पवित्र-मर्यादित होना आधारभूतिक आवश्यक सत्य विशेष है तकनीकी रूप से जो कि आवश्यक व्यवहारिक सोच की पवित्रता विशेष से जुड़ा हुआ है केवल यही दुर्लभ कमाई विशेष ही तेरे इस “सफर” का आवश्यक राह खर्च विशेष है “निरन्तर.....!” इस आवश्यक राह खर्च के अभाव में ये रास्ता तय होना तो एक तरफ रहा तू इस बारे में विचार तक करने में भी घौर असमर्थ विशेष ही है प्रत्येक काल में । एक छोटी सी भी वासना आगे बढ़ने की घौर रूकावट विशेष और नीचे गिरने अर्थात् दुर्लभ-दुर्लभ निकृष्ट योनियों विशेषों में भ्रमण का निश्चित “फ्री” का आवश्यक दुर्लभ पैकेज विशेष है.....! छल-फरेब-घूस अथवा महान चढ़ावे विशेष-विशेष पर जुगाली विशेष-विशेष करने वाली आत्मा अथवा

आत्मायें अत्यन्त दुर्लभ-दुर्लभ प्रयत्नों विशेषों के बावजूद इस सफर पर चलना तो दूर रहा आगे एक कदम भी नहीं बढ़ा सकती फिर अपने आधार विशेष को प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने में भला कैसे समर्थ विशेष हो सकेंगी.....? अर्थात् ये महानतम महान धार्मिक सामाजिक आत्मायें विशेष-विशेष इस सफर अथवा रास्ते-गली विशेष की पथिक ही नहीं हैं.....! अतः इन महानतनों के “संग विशेष व्यवहार” से सावधान विशेष रहना प्रत्येक दुर्लभ प्रमाणिक पथिक विशेष के लिये घोर आवश्यक विशेष है.....! सम्पूर्ण चढ़ावा महान विशेष-विशेष सिवाय समाज के विभिन्न बलात्कारों विशेष के और कुछ भी नहीं हैं और इससे किया गया कोई भी पोषण अथवा समाज निर्माण प्रत्यक्ष में कितना भी कल्याणकारी-लाभदायक क्यों न दिखाई दे परन्तु कलान्तर में यह एक भयानक कौढ़ रूपी अपवाद विशेष के रूप में ही प्रगट होगा एक “महामारी” विशेष के रूप में जिसका नतीजा पूरी सृष्टि का पतन सम्पूर्ण जीवों सहित निश्चित विशेष है इसे गाँठ बाँध लो.....! समाज का निर्माण अथवा पोषण केवल और केवल मर्यादित दुर्लभ आवश्यक कमाई विशेष से ही किया जाना प्रत्येक जीव विशेष के लिये पूर्ण कल्याणकारी विशेष है प्रत्येक आवश्यक दृष्टिकोण विशेष से.....! बिना लोभ के कुछ भी सम्भव नहीं फिर बिना “सीमा” आवश्यक के यही लोभ सिवाय पाप के और कुछ भी नहीं फिर यही पाप “चढ़ावे रूपी घूस विशेष” के वातावरण में

ऐसी भयानक तेजी से पनपता-पलता-बढ़ता है कि आप की सभी महामारियाँ अवश्य छोटी अथवा केवल फीकी ही साबित विशेष होती हैं प्रत्येक काल में और फिर यही भयानक वाईरस रूपी लोभ प्रत्येक अगली पीढ़ी विशेष में और अधिक घोर भयानक समर्था विशेष लिये प्रगट विशेष होता है जिसकी पहले से ही कोई आवश्यक सीमा अथवा रोकथाम उपलब्ध विशेष ही नहीं है फिर इस घोर भयानक महामारी से कौन अपने को कैसे सुरक्षित विशेष रख सकता है.....? किसी भी काल विशेष में अर्थात समाज के निश्चित पतन विशेष का कारण ये लोभ रूपी कीड़ा विशेष ही है जो कि चढ़ावे रूपी घूसी वातावरण विशेष में पलता-बढ़ता-पनपता पूरी आवश्यक सत्ता विशेष को टिड्डी दल विशेष की तरह से पूर्ण हज़म विशेष कर जाता है कुछ भी भान विशेष होने से पहले ही ये आपकी दुर्लभ हस्ती विशेष को ही चट विशेष कर जाता है.....! ग्लोबल समस्या का कारण आधारभूतिक भी ये कीड़ा विशेष ही है शेष सभी ढोल विशेष-विशेष व्यर्थ के प्रलाप मात्र हैं यकीनी तौर पर.....! इसके लिये प्रत्येक आत्मा आधिकारिक रूप से पूर्ण जिम्मेदार विशेष है अपने-अपने दुर्लभ-दुर्लभ आवश्यक उपलब्ध प्रत्यक्ष साधनों व्यवहारों अनुसार.....! चढ़ावे का निपटारा सामूहिक खेती तथा उससे सम्बन्धित आवश्यक पूरक उद्योगीकरण विशेष से है बिना किसी की विचोलिये रूपी “सत्ता” विशेष के न कि रंग-तमाशे रूपी जलूस बैंड-बाजा विभिन्न कर्म-

काण्ड-कीर्तन दरबार-प्रवचन- दर्शन-स्नान-दिखावे की दुर्लभ-
दुर्लभ क्रियाएँ विशेष-विशेष-सोने-पत्थरों दुर्लभों से मढ़ना-
कीमती सामग्रियों-फूलों इत्यादियों वगैरह-वगैरह पर खर्च व्यर्थ
नष्ट विशेष करना.....! लेकिन याद रहे “सावधान” कोई भी
प्रत्यक्ष लाभकारी क्रिया-व्यवहार “चढ़े हुऐ बलात्कारों” को
कल्याणकारी मर्यादित पुण्य विशेष आवश्यक में नहीं बदल
सकता फिर आपके पास बचा हुआ शेष दुर्लभ-दुर्लभ रेप विशेष
कैसे हज्म विशेष करने योग्य विशेष हो सकता है प्रत्येक काल
में सभी दुर्लभ-दुर्लभ उपायों विशेषों के बावजूद भी.....? सभी
प्रकार के महान-महानतम स्थान दुर्लभ-दुर्लभ विशेष-विशेष
अपनी आवश्यक सामग्रियों विशेषों सहित किसी भी दुर्लभ
चमत्कार या प्रभु की सोच के एक छोटे से कण विशेष का भी
हिस्सा नहीं है इसे गाँठ बाँध लो.....! प्रयोगशाला में सामग्रियों की
जाँच से कोई लाभ नहीं जाने अनजाने संयोग बस बहुत सी
सामग्रियाँ प्राकृतिक तौर पर जीव के लिये लाभकारी विशेष होती
हैं समयानुसार थोड़ी बहुत स्थिति विशेष विचार के तथा शेष सभी
चमत्कार विशेष-विशेष महान वहाँ पर मौजूद प्रत्यक्ष लेकिन न
दीखने वाली जूनों विशेषों में रहने वाली प्रेत-आत्माओं विशेषों का
किया धरा है केवल उन स्वयं की स्वार्थ रूपी वासनाओं विशेषों
को पूरा करने हेतु “खर्च” किया गया उनका एक दुर्लभ
आवश्यक लेकिन “घोर सीमित” सिक्का विशेष फिर उस खर्च

का बहुत बड़ा आवश्यक ढोल विशेष पीटा जाता है ताकि “और” अधिक एकत्र होते रहें और उनके ये “निर्धारित” आवश्यक महान स्थान विशेष-विशेष पूजित-धूपित-सुगन्धित-सुरक्षित विशेष रहें और उन्हें प्रभु देवों के रूप में माना-जाना-पूजा-सिजदा किया जाये वगैरह-वगैरह । लाखों-करोड़ों श्रद्धालुओं के प्रार्थना-पूजा-चढ़ावे-तड़पती हुई पुकारों में से केवल कुछ दसों की ही पीड़ा अधूरी दूर विशेष होती है अर्थात् .000001% भी नहीं-ये कौन से प्रभु का भयानक सा दौ-गला चमत्कार विशेष है.....? जिसके साथ ये चमत्कार विशेष-विशेष हुआ है वो जान ले या तो ये आत्मा इन्हीं प्रेतों भरी जूनों विशेषों से मनुष्य जून में प्रगट विशेष हुई हैं अथवा “वापस” वो फिर से या मुआवजे के रूप में इन जूनों विशेषों के बीच में ही अवतरित होने का दुर्लभ आवश्यक प्रमाण पत्र विशेष प्राप्त कर चुकी है यकीनी तौर पर.....! “शेष” को क्या पुकारना तड़पना नहीं आया या इस “हरामी प्रभु” को घूस समर्थ देने में घौर असमर्थ विशेष रहा.....! चारों तरफ तड़पते-हाहाकार करते भूखे-नगे दुखी-हस्पताल-जूनें आपको दिखायी नहीं देते या ये दौगला हरामी प्रभु ही अंधा-बहरा है जो “तीबा” व्यवहारिक को भी न तो देख पा रहा है और न सुनने में ही समर्थ विशेष है प्रत्येक काल में.....! अर्थात् अपने अन्धे कर्म-काण्डों को नजदीक से गौर करके पहचानों और कोई आपको लूटे अपने दुर्लभ आवश्यक मनुष्य जन्म विशेष को इन लूटने वाली जूनों

विशेषों से बचा सुरक्षित करो.....! आप कोई दवा विशेष भी तभी प्रचारित विशेष करते हो जब वो 90% से अधिक को पूर्ण रूप से स्वस्थ विशेष करती है.....! फिर ये कौन से प्रतिशत घटाव के ढोल को पीटने में आप दुर्लभ घौर चमत्कारिक व्यस्त विशेष हो निरन्तर डेढ़ सौ-पांच-दो हजार साल से अधिक हो गये भण्डारा सत्संग करते दर्शनों में मुक्ति बांटते लाखों को नाम अमृत देते लेकिन कितनों ने लाभ उठाया उनकी गिनती आप की उंगलियों के पौटों विशेषों से भी कम हैं फिर भी शर्म नहीं आती निरन्तर ढोल विशेष-विशेष पीटते गंदगी फैलाते छोटे अपराधी को बड़ा बनाते पूरी मनुष्य जाति को प्रभु मार्ग से पथ-भ्रष्ट करते मत्था टिकवाते महा हराम महान-महान कबूल करते अमृत-नाम दर्शन देने संवरने में ही दुर्लभ घौर व्यस्त विशेष हैं निरन्तर ये महान-महानतम विशेष-विशेष दुर्लभ धर्मा-समाजाधिकारी.....! कितने पथ-भ्रष्ट हुऐ पांच सौ बरसों में उनकी गिनती पूरी सौ प्रतिशत निश्चित है फिर भी पंथ की महानता दिन रात बढ़ती ही जा रही है निरन्तर.....! कहने को गुरु वाले हैं पर गुरु जी तो केवल “हाथ सेकने” के योग्य ही रह गये हैं कहीं गलती से भी हाथ लग गया तो भस्म होना तो निश्चित ही है फिर “सावधानी” भी तो कोई चीज है.....! इनसे मिलिये दो हजार सालों से स्वर्ग में हवन विशेष करने में ही दुर्लभ घौर व्यस्त विशेष हैं ये “परमेश्वर पुत्र” और उनके विशेष महान दुर्लभ “पैगम्बर-दूत विशेष” और यहाँ पूरी की पूरी

कायनात ही पलट गई केवल नकों घौर विशेषों का ही प्रमाणपत्र विशेष प्राप्त हो सका और अभी भी इन्तजार है कि कयामत के रोज जिलाये जायेंगे.....! वाह रे महान दुर्लभ-दुर्लभ पैगम्बर-पुत्र विशेष-विशेष अब तो जाग बन्द कर अपने इस हवन दुर्लभ विशेष को अब तो कोई आत्मा मनुष्य जून के योग्य ही नहीं रही फिर किस के उद्धार विशेष करने में दुर्लभ घौर व्यस्त विशेष है.....!

15. धर्मशाला विच धड़वाई रहंदे-ठाकुर द्वारे ठग । मसीतां विच कसबी वसन “आशिक रहण अलग”.....! अर्थात् धर्मशाला-ठाकुर-द्वारे-मस्जिदें-चर्च वगैरह-वगैरह सभी महान-महान स्थान विशेष “धर्म” के नाम पर डाकुओं-ठगों-जेब तराशे वगैरह-वगैरह के “दोनों हाथों से इंसान को लूटने वालों के” रहने के अड्डे विशेष हैं इनमें कुछ बाद में प्रत्यक्ष हुऐ विशेष कुछ “चकले” यानि स्थान महान विशेष-विशेष और शामिल कर लो जैसे-गुरुद्वारे-सत्संग डेरे प्रवचन घर “ब्राह्म सन्यासी” स्थान महान-महान “प्रभु” को अपने मन रूपी दण्ड के अनुसार नचा-नचा कर अजीब-अजीब से “मुजरे” विशेष-विशेष प्रत्यक्ष करते हैं और फिर बड़ी सफाई से आपकी गुप्त जेब भी तराश ली जाती है अर्थात् पूरी तरह से साफ विशेष कर लेते हैं और आगे के लिये भी आवश्यक सफाई विशेष का अनुबंध विशेष-विशेष स्थापित कर लेते हैं और हाथ जोड़ कर अपने मुँह पर सन्यासी महान विशेष की तख्ती विशेष लगा कर अपनी निजी गुप्त गुफा विशेष में अन्तर्ध्यान विशेष हो

जाते हैं **“और”** अधिक बलवान विशेष होने के लिये ताकि आपको पहले से अधिक बढ़िया महान सेवा यानि सर्विस सफाई विशेष-2 की प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करवाई जा सके.....! आपको सीधी सी बात समझ में नहीं आई ये सभी स्थान महान-महान चलते कैसे हैं....? केवल आपकी कमाई से और इनकी पोषण सहित निकृष्ट वासनाताक कामनायें पूरी कैसे होती हैं केवल आपको मूंडने विशेष से और यह सब किया जाता है **“प्रभु”** के महान अमृत नाम विशेष पर अरे क्या प्रभु में इतनी भी क्षमता विशेष नहीं है कि वो बिना कुछ भी निकृष्ट भेंटा विशेष लिये इनकी वासनाओं को पूरा कर सके जबकि वो आप की अनन्त कमीनी वासनात्मक समस्याओं विशेषों को केवल इनके दोगले दर्शनों - प्रवचनों इत्यादि कर्मकाण्ड **“फोकटों विशेषों”** से ही पूरा करने में घोर समर्थ विशेष है.....! अगर ये धंधा विशेष-विशेष प्रभु द्वारा चलाया गया है तो उसका नाम **“महा-दल्ला विशेष”** होना चाहिये जो छोटे दलालों के जरिये अपने ही बनाये-धारण किये हुए जीव विशेष को निरन्तर **“तराशने”** विशेष में ही मग्न-घोर प्रसन्न-संतुष्ट विशेष है.....! कहने को तो ये महान शाकाहारी विशेष-विशेष हैं लेकिन **“मनुष्य”** का रक्त बिना कुछ भी मिलाये मिलावट विशेष के सीधा ही मुँह लगा कर पीते हैं और मांस ऐसे चबाते हैं कि हड्डियों तक का भी पता नहीं चलता अर्थात् बड़ी चालाकी से नाम विशेष अमृत की आढ़ में दूसरे का आवश्यक दुर्लभ अधिकार

विशेष-विशेष उसके सामने ही अपने महान-महान गुरुओं-
पातशाहों -सतगुरुओं-दोगले प्रभु विशेषों-विशेषों महानों की कृपा
विशेष-विशेष की दुर्लभ आवश्यक मदद विशेष-विशेष महान से
“हज्म” विशेष कर जाते हैं इससे पहले कि आपको कुछ भान
विशेष हो ये किसी दूसरे ही तीर्थ यानि स्थान महान विशेष पर
अन्तर्ध्यान विशेष हो जाते हैं.....! जो लफजों को नाम बतायें जल
को अमृत तथा प्रेत क्रम विशेष को प्रभु का चमत्कार बता कर
निरन्तर पीढ़ी दर पीढ़ी आपकी “मर्जी विशेष” से आपको दुर्लभ
विद्वान विशेष-विशेष महान बता बना कर कुतरता रहे चाटता
विशेष तराशता रहे उसे आप इन छोटे से धड़वाई-ठग-कसबी
जैसे अधूरे छोटे-छोटे लफजों विशेषों में कैसे फिट विशेष कर
सकोगे.....? जो दर्शनों विशेषों में मुक्ति बाटे कथा बतायें जलूसों-
प्रवचन-कीर्तनों को प्रभु की प्रसन्नता का साधन हाके बांग दें
प्रार्थना-अरदास आदि को साधन विशेष-विशेष साबित करें “पाप
को पुण्य विशेष” में बदलने का तो फिर ये चकले लफज विशेष
में कैसे आ जायेंगे और हांकने का मुजरा विशेष करने वाले तो
इस रंडी लफज विशेष को ही अधूरा छोटा सा साबित विशेष करने
में ही समर्थ विशेष होंगे प्रत्येक काल विशेष में यकीनी तौर पर.....!
“काइयां महल-मंदर-घर हरि का” अर्थात् उस आधारभूत “परम
चेतन सत्ता” विशेष ने सब कुछ प्रत्यक्ष विशेष कर स्वयं को तेरे
अपने निजी आवश्यक दुर्लभ शरीर विशेष “काइया” में ही केंद्रित

संघटित विशेष कर रखा है.....! उस तक पहुँचने अनुभव विशेष करने का रास्ता भी बाहर कहीं से भी नहीं बल्कि तेरे स्वयं के ही अन्दर विशेष से जाता है.....! बाहर तो प्रभु के नाम पर केवल बस ठगी अथवा धोखा महान विशेष-विशेष ही है प्रत्येक काल में निरन्तर गाँठ बाँध ले चतुर विद्वान श्रेष्ठ! जो कुछ भी तू चाहता है शान्ति -संतुष्टि वो केवल तेरे अपने अन्दर ही है जिस नाम विशेष की तुझे तलाश है वो भी तेरे अन्दर ही है । जिस अमृत को पी कर तू सदा के लिये अमर विशेष होना चाहता है वो भी तेरे अन्दर ही है जिस बाणी को सुन कर तू आत्म विभोर होना चाहता है वो भी तेरे अन्दर ही है । जिस कीर्तन को सुन कर तू सदा के लिये मस्त विशेष होना चाहता है वो कीर्तन दुर्लभ आवश्यक विशेष भी **“निरन्तर”** बिना रुके तेरे स्वयं के अन्दर ही हो रहा है यही वो कीर्तन विशेष है जिसे सुन कर तू सदा के लिये मुक्त विशेष हो जायेगा **“निर्वाण कीर्तन गावह करते का-निमख सिमित जित छूटे!”** जिस दर्शन से तुझे आनन्द मुक्ति मिलती है वो भी तेरे स्वयं के अपने अन्तर विशेष में ही है । जिस ज्ञान दुर्लभ विशेष आवश्यक के लिये तू बाहर भटक विशेष रहा है वो तो आद यानि के शुरू से ही तेरे स्वयं के रूप अर्थात् आत्मा विशेष में तो आत्मिक रूप से कूट-कूट कर भरा खोदा हुआ है । बस तुझे तो केवल स्वयं को ही कुछ कुरेदना मात्र है अर्थात् मर्यादित विशेष होना है यानि के बाहर तो कुछ भी **“ज्ञान विशेष”** नहीं है ।

अरे जब क से डा तक सभी अंक विशेष तेरे स्वयं के अपने अन्दर ही खुदे हुए विशेष हैं तो फिर तू किसी विशेष-विशेष “लफज विशेष” को बाहर क्यों ढूँड रहा है.....! मूर्ख महान चतुर प्राणी तू स्वयं एक उस “रागमई प्रकाशित आवाज” विशेष अर्थात् नाम के सिवा और कुछ भी नहीं है....! तेरा ये दुर्लभ प्रत्यक्ष उपलब्ध रूप विशेष ही आइना विशेष है स्वयं के अपने आत्मिक आधारभूतिक रूप विशेष को देखने अनुभव विशेष करने का.....! दूसरे किसी भी महान से महानतम आईने विशेष-विशेष महान में अपने स्वयं के दुर्लभ आवश्यक रूप विशेष को देखने की कोशिश मत कर वहाँ तो तुझे सिवाय इस “धोखे विशेष” के और कुछ भी मिलने वाला नहीं है.....? अभी आप ने कहा कि इन ठाकुर द्वारों पर ठग विशेष रहते हैं फिर इस शरीर रूपी प्रभु मन्दिर विशेष में क्या कोई ठग विशेष नहीं है.....? तुझे यकीन नहीं आता चतुर प्राणी क्या प्रत्यक्ष हुई लिखित विशेष भी कभी झूठी हुई है तेरे इस प्रभु मंदिर में तो सब से बड़ा ठग रूपी दल्ला विशेष रहता कब्जा विशेष जमाये हुए है जिसे तूने अपना निजी सलाहकार वजीर विशेष बना रखा है.....! “दुर्लभ आवश्यक मन विशेष” ये तो जरूरत आवश्यक विशेष है फिर दल्ला कैसे हो गया.....? इसका कारण इसका रोगी विशेष होना है अर्थात् इसमें एक सूक्ष्म “वाइरस विशेष” घुसा हुआ है अनन्त काल से जिसका नाम “लोभ” विशेष है “मन का सूतक लोभ है.....!” इस भयानक घोर रोग विशेष के कारण इसे

सुहागिन के बजाये रंडी विशेष बनना अधिक पसन्द है इसका उपचार आवश्यक विशेष भी केवल तेरे स्वयं के निजी हाथों विशेषों में ही है अर्थात् केवल पूरी तरह से प्रमाणिक मर्यादित विशेष होना निरन्तर पूरी ईमानदारी विशेष से.....! “तित्थे देह जात न जाई जित्थे लेखा मंगिये” अर्थात् तुझे इसने बाहरी कर्म-काण्डों विशेषों में उलझा फंसा विशेष-विशेष रखा है उनका तो कोई योगदान ही नहीं है वहाँ पर जहाँ तेरा स्वयं का केवल निजी दुर्लभ आवश्यक फैसला विशेष महान-महान होना है.....! उसके द्वारा किया गया एक छोटा सा भी रेप विशेष आपका करोड़ दिन बार-बार रेप होना निश्चित आवश्यक “प्रमाणपत्र” विशेष है “कम से कम” निमख काम स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावह.....! इस बीमारी घोर के होते हुऐ फिर कैसे उसे अनुभव विशेष किया जा सकता है जो शुरू से अन्त तक पूरा का पूरा तेरे स्वयं के अन्दर ही समाया हुआ मौजूद प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष है.....? “निरमल मन जन सो मोहि पावा-मोहि कपट-छल-छिद्र न भावा.....!” अर्थात् केवल यही दवाई दुर्लभ आवश्यक विशेष है उस “रागमई प्रकाशित आवाज़” विशेष को सुनने-देखने-प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने की प्रत्येक काल में बिना किसी भी दलाली-घूस-दल्ले विशेष-विशेष महान के दखल विशेष दर्शन महान को.....!

16. “घर” ही में “अमृत” भरपूर है.....! “मनमुखा” स्वाद न आइया घर रूपी घट विशेष में अर्थात् आत्मा कहाँ रहती है.....?

तेरे अपने स्वयं के शरीर रूपी आवश्यक आवरण विशेष में यानि के तेरा अपना स्वयं का रूप ही तेरे अपने वजूद रूपी दुर्लभ आत्मा विशेष के रहने का घट रूपी घर विशेष है जिसमें “रागमई प्रकाशित आवाज़” रूपी दुर्लभ आवश्यक अमृत विशेष लबालब भरा हुआ अखुट भण्डार के रूप में प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष है “निरन्तर” तुझ अधूरे प्यासे की प्यास विशेष-विशेष बुझाने के लिये “मचल” विशेष रहा है और तू है कि बाहर महान-महान कर्म-काण्डों विशेषों में दुर्लभ भटक विशेष रहा है.....! अरे मूर्ख जो पदार्थ जहाँ है ही नहीं वो तुझे वहाँ कैसे और क्यों कर उपलब्ध विशेष हो सकता है.....! सभी तत्व आवश्यक विशेष प्राकृति के चारों ओर प्रत्यक्ष विद्यमान विशेष रहते हैं परन्तु किसी एक के लिये वहाँ जाना पड़ता है जहाँ उसकी विशेष विशुद्ध यात्रा प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष होती है जैसे जल का प्राणी वायु के लिये स्तह पर आता है और वायु का प्राणी जल हेतु स्रोत की ओर बढ़ता है । उसी तरह से पूरी सृष्टि एक उस प्रभु की व्यवहारिक सोच विशेष के और कुछ भी नहीं है.....! परन्तु उसे प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने हेतु अपने ही शरीर रूपी प्राकृति के आवरण विशेष में विशेष आज्ञा चक्र में प्रवेश करना होता है “आत्मिक” रूप से क्योंकि यहीं पर उस एक की पूरी संघटित विशुद्ध मात्रा विशेष भरपूर अखुट आवश्यक भण्डार विशेष के रूप में प्रत्यक्ष विद्यमान उपलब्ध विशेष रहती है “निरन्तर!” जैसे हीरा-सोना आदि

विभिन्न धातुओं विशेषों के लिये आपको उनके मिलने के स्थान की ओर मेहनत से मर्यादित बढ़ना “विशेष” होता है महान से महानतम जानकार से तो केवल जानकारी विशेष ही उपलब्ध होती है न कि पदार्थ रूपी धातु विशेष-विशेष मिल जाती है.....! ये साधारण और सीधी सी बात आपको क्यों नहीं समझ में आती.....? क्यों महान-महान दल्लों विशेषों के पीछे भाग विशेष रहे हो अपनी दुर्लभ आवश्यक हस्ती विशेष को पूरी तरह से मिटाते विशेष नष्ट करते हुऐ.....? प्रभु ने सभी को एक सा बनाया है और एक सा ही भरपूर दिया हुआ भी है अखुट भण्डार विशेष के रूप में.....! मत-धर्म-नीती-देने-लेने आदि के कर्म-काण्ड केवल आप स्वयं के बनाये हुऐ हैं इसीलिये इनमें विभिन्नता है.....! तुम्हारे इन धन्धों विशेषों से प्रभु का कोई कुछ भी लेना-देना नहीं है इसे अच्छी तरह से जान लो.....! “सब में एक वस्तुदा (भरपूर) जिन आपे रचन रचाई.....!” “धोखे” से बचना चाहते हो तो जानकारी का लाभ उठाओ और “विचार विशेष” कर प्रमाणिक व्यवहारिक रूप से पूरी ईमानदारी विशेष से “जीते जी ही केवल” अपने इस दुर्लभ आवश्यक कार्य विशेष को पूरी तरह से समाप्त अथवा सम्पन्न विशेष कर लो फिर जितना मर्जी नाच-कूद-ताली विशेष-विशेष पीट लेना.....! बच्चा तभी सफलता को प्राप्त विशेष होता है जब वो पहले आवश्यक होम वर्क को पूरा कर लेता है फिर जी भर खेलता है जो केवल खेलता विशेष है वो अवश्य ही समाज

विशेष में पिछड़ विशेष जाता है और शेष उम्र भर उसे बहुत सी मुश्किलों विशेषों का सामना विशेष-विशेष करने के लिये न चाहते हुऐ भी मजबूर विशेष होना ही पड़ता है प्रत्येक काल में निरन्तर तड़पते विशेष हुऐ यकीनी तौर पर.....! राम-गुरु आदि “विशेष-विशेष” की पूजा-ध्यान से तुम्हें कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं है लेकिन यदि उनके प्रमाणिक आवश्यक दुर्लभ “चरित्र विशेष” को पूरी ईमानदारी विशेष से व्यवहारिक रूप से अपना विशेष लो तो तुम भी अवश्य ही “मर्यादा पुरुषोत्तम” कहलाओगे सभी मण्डलों विशेषों में और सभी अपदाओं विशेषों से सदा के लिये बच छूट जाओगे प्रमाणिक तौर पर प्रत्येक काल में.....!

निरन्तर “मन” को खुश प्रसन्न विशेष रखने में दुर्लभ घौर व्यस्त आत्मा विशेष इस सब को जानते हुऐ भी कुछ लाभ नहीं उठा पाती अर्थात उसका मनुष्य जन्म व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है और बदले में बोनस के रूप में अनन्त काल तक उसे अपने इन्हीं स्वादों विशेषों के कारण विभिन्न निकृष्ट योनियों नर्को घौर विशेषों-विशेषों में निरन्तर तड़पते हुऐ “भटकना” विशेष पड़ता है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से प्रत्येक उपलब्ध समय काल विशेष में प्रमाणिक तौर पर.....! अर्थात मनमुखाः स्वाद न आइया । मनमुखा नू फिर जन्म है यानि के एक जन्म का दुख तो ब्यान किया भुगता नहीं जाता फिर अनन्त योनियों में जन्म मरण के अनन्त काल के इस भयानक तड़पाने वाले दुखों विशेषों

से भरे हुए चक्र विशेष को कैसे और किन लफजों विशेषों से ब्यान विशेष-विशेष करोगे हे महान-महान दुर्लभ विद्वानों विशेषों.....?

“ज्यों “कस्तूरी” मृग न जाणे-भ्रमदा भ्रम भुलाइया” अर्थात जैसे मदमस्त सुगन्ध कस्तूरी की मृग को ता उम्र मस्त-मग्न विशेष रहती है और उसके “भ्रमिक” अनुभव विशेष हेतू को निरन्तर आस-पास की झाड़ियों विशेषों में ही उस दुर्लभ सुगन्ध की तलाश विशेष करता रहता है और उसी “अभाव विशेष” में उसकी मृत्यु विशेष हो जाती है लेकिन उसकी यह दुर्लभ वासना मिलन अनुभव विशेष की कभी भी पूरी ही नहीं होती.....! कारण उसकी तलाश ही गलत थी क्योंकि जो उसे चाहिये था वो तो सदा से ही उसके साथ निरन्तर उसकी अपनी ही नाभी विशेष में निश्चित प्रत्यक्ष उपलब्ध विद्यमान विशेष था सुगन्धित कस्तूरी विशेष के रूप में.....! केवल गलत स्थान पर तलाश विशेष करते रहने से “भ्रमों” के भव सागर में जीव भी अपना मनुष्य जन्म दुर्लभ आवश्यक “खो” कर बाद में बहुत ही पछताता विशेष है पर फिर क्या हो सकता है.....? लेकिन जब तक प्राण प्रत्यक्ष धड़क विशेष रहे हैं प्राणी तू अवश्य ही अपनी तलाश विशेष में सफल विशेष हो सकता है पूरी ईमानदारी रूपी मर्यादित आवश्यक मेहनत विशेष से “ठीक दिशा विशेष” में बढ़ते विशेष हुए “निरन्तर” यकीनी तौर पर.....! आपके अपने ही हाथों विशेषों से बनाये हुए मिट्टी-पत्थर के महान-महान मकबरों विशेषों में परमात्मा को भ्रमित-स्थापित विशेष-विशेष

कर महंगी सामग्रियों-ईत्रों-फूलों-मंत्रों-श्लोकों कठिन-विशेष-विशेष महान से पूजा-अर्चना विशेष-विशेष महानतम महानुभावों द्वारा करते हो और सफाई इत्यादि का भी विशेष प्रबन्ध ध्यान रखते हो “मुखौटे विशेष” के रूप में.....! परन्तु जहाँ जिस घर में वो जन्म से ही प्रत्यक्ष प्रमाणिक उपलब्ध विद्यमान विशेष रहता है जिसे उसने स्वयं के अपने ही हाथों विशेषों से अपनी ही निजी पसन्द विशेष अनुसार बनाया विशेष है उसे साफ विशेष रखना तो दूर एक तरफ रहा उल्टा निकृष्ट गन्द विशेष-विशेष डालने के लिये आपने एक “मन” रूपी महान पांडा विशेष निर्धारित विशेष कर रखा है और इस बात का तो सदा ही ध्यान विशेष रखते हो कि कहीं वो कमीना गंद महान विशेष-विशेष डालने में कुछ कमी न कर दे या चूक विशेष न जाये “निरन्तर” ही इस बात से सदा सावधान विशेष रहते हो.....! कमीनी निकृष्ट-गन्दी वासनाओं से भरपूर भण्डार रूपी मन की संगी विशेष आत्मा कैसे अपने को इन कर्मकाण्डों से प्रत्यक्ष उपलब्ध नतीजों विशेषों से बचा विशेष पायेगी किन् उपायों विशेषों से क्यों कर इसे राहत विशेष मिल पायेगी.....? जो साधारण सी बात जिन्दगी भर समझने व्यवहार करने विशेष में पूरी तरह से असमर्थ विशेष रही अर्थात् “अम्लाना उत्ते होनं निवेडे-खड़ियां रहण गियां जाता” यानि के तेरे सभी नाम-अर्चना-अमृत-पूजा-रोजा-सामग्री-घूस विशेष महान-महानदर्शन-ध्यान-प्रवचनविशेष-विशेष-जल-मिट्टी-तीर्थ-

सरोवर-स्नान-गाडीज-ताबीज-मन्त्र-श्लोक-जलूस-कीर्तन-
नाच-गाना विशेष-विशेष महान-महान सभी प्रकार की कर्मकाण्ड
रूपी धार्मिक क्रियाएँ केवल “खड़ियां रहन गया” और तेरा मुँह
विशेष चिढ़ायेंगी जब कोई तेरे किये का “नतीजा विशेष”
भुगतवाने वसूल करने हेतू तुझे बालों विशेषों से पकड़ कर घसीट
विशेष ले जायेगा.....! क्योंकि प्रत्येक फैसला केवल और केवल
तेरी स्वयं की व्यवहारिक सोच रूपी अम्ल विशेष के आवश्यक
नतीजे विशेष के रूप में ही होता है प्रत्येक काल में विधि के
वैधानिक रूप में निरन्तर.....! भूखा रहने माला-रोजा रखने व्रत
विशेष-विशेष-सवेरे शाम पाँच बार झख मारने पशु परिन्दों की
बलि रूपी कुर्बानी विशेष-विशेष से प्रभु का दूर-दूर का भी कोई
सम्बन्ध ही नहीं है इसे अच्छी तरह से गाँठ बाँध ले चतुर महान
विद्वान श्रेष्ठ! यह सब तेरे “मन” विशेष की बनायी हुई दुर्लभ-
दुर्लभ महान कर्मकाण्ड रूपी चालें विशेष-विशेष हैं जिससे तेरा
जन्म दुर्लभ आवश्यक सदा के लिये खत्म विशेष हो जाये.....!
जरा अपनी गर्दन पर छुरी फेर कर देख तुझे प्रभु की प्रसन्नता
अनुभव होगी.....! कैसे खून और मांस-तड़पते हुऐ जीव “एक से
विशेष का” तुझे संतुष्ट और प्रसन्न विशेष करने में समर्थ विशेष
हो सकता है “प्रसाद विशेष प्रभु के रूप में”? क्योंकि तेरे में
और उस जीव की आत्मा और प्रभु में क्या फर्क विशेष है.....?

“मन तो लेखा मंगिये जिन कीता वापार” अर्थात् यही मन तेरे खिलाफ पूरी गवाही मुखबरी विशेष करेगा कि इस आत्मा विशेष ने कब-कहाँ-क्या-क्या किया किन्-किन् महान-महान तरीकों-उपायों साधनों विशेषों से दुरूपयोग महान विशेष-विशेष करते हुऐ कैसे-कैसे इस पूरी सृष्टि का सभी प्राणियों सहित का हनन-रेप विशेष-विशेष किया और प्रभु के नाम पर “हलाल” विशेष-विशेष की संज्ञा विशेष-विशेष दे कर “छुपाये” स्वयं को महान-श्रेष्ठ साबित विशेष-विशेष करता रहा.....! “सब कुछ घर मह बाहर नाही-बाहर टोले सो भ्रम भुलाई” जब सब कुछ तेरे स्वयं के अपने ही घर रूपी घट विशेष में ही प्रत्यक्ष उपलब्ध विद्यमान विशेष है तो फिर बाहर उसकी तलाश कैसे सफल विशेष हो सकती है तुझे तो केवल दिशा परिवर्तन करना है रब दा की पाउणा “एदरों पुटणा ते उदर लाउणा” अर्थात् मन ने तुझे बाहर संसार रूपी पदार्थों-स्वादों विशेषों में फँसा-उलझा विशेष रखा है उसे तू यहाँ केवल गुजारे मात्र के लिये ही रख और शेष सारी आवश्यक दुर्लभ समृथा विशेष को अन्दर की ओर ट्रांसफर विशेष कर फिर नतीजा उपलब्ध स्वयं ही देख लो यही सारा जग विशेष तुझे अपने ही पीछे-पीछे लगा दिखाई देगा.....! “आप संवारे में मिले “में” मिलया सुख होई-जे तू मेरा होई रहैया सभ जग तेरा होई!” लेकिन इस स्वभाविक रूप से प्रत्यक्ष उपलब्ध आवश्यक अखुट भण्डार विशेष तक पहुँचने के लिये तुझे इन चार लफ्जों विशेषों

से प्रमाणिक तौर पर ऊपर उठना विशेष होगा “छोड़ह वेस-भेख-चतुराई दुबिधा इह फल नाही जिउ” अर्थात् सभी प्रकार के धार्मिक-संसारिक रूप-रेख-रंग-दाड़ी-टोपी-चुटिया-पगड़ी-श्रृंगार रूपी वेसों इत्यादि से आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से अपने को समर्थ विशेष बनाना होगा । “भेख” तो आपने ऐसे अपना रखी है कि प्रत्येक दूसरे के सामने जानै से पहले आप सम्बन्धित विशेष-विशेष मुखौटा विशेष लगाते हैं फिर उसका आवश्यकता अनुसार विचार विशेष करते हैं.....! “चतुराई” अर्थात् निकृष्ट कमीनी चालाकियों का ऐसा अखुट भण्डार विशेष आपकी प्रत्येक नस के कण-कण में समाया हुआ विशेष है कि चतुराई लफ़्ज़ इन भारी भरकम निकृष्ट कमीने भण्डारों विशेषों को धारण करने में घौर असमर्थ विशेष है प्रत्येक काल में.....! “दुबिधा” अर्थात् जब तक आप अपने इस “मन” रूपी दल्ले विशेष को बड़ा सा दुर्लभ आवश्यक लाभ विशेष दिखाओगे नहीं वास्तविक रूप से प्रत्यक्ष साबित विशेष करके ये आपको सदा दुबिधा रूपी “भ्रम” विशेष में ही रखेगा और आप फिर इसके अभाव विशेष में कैसे जीते जी अपनी दुर्लभ आवश्यक मंजिल विशेष को प्रत्यक्ष प्राप्त अनुभव विशेष करने में समर्थ विशेष हो सकोगे प्रत्येक काल में प्रमाणिक तौर पर.....! इन चार लफ़्ज़ों विशेषों को प्रमाणिक रूप से कमाये विशेष बिना तुझे वाञ्छित आवश्यक दुर्लभ फल विशेष की प्राप्ति तो एक तरफ रही वैचारिक

कल्पना विशेष भी घौर असम्भव विशेष ही है प्रत्येक काल में यकीनी तौर पर.....!

17. “काहे रे बन खोजन जाई-सरब निवासी सदा अलेपा तोहे संग समाई” अर्थात् अगर तू उस एक का दिवाना विशेष है तो भाई उसे तू बाहर बन यानि के गुरुद्वारे-मन्दर-डैरे-चर्च-मस्जिद इत्यादि महान-महान स्थानों डेरों वगैरह-वगैरह में तलाश मत कर वहाँ तो तू केवल अपना दुर्लभ आवश्यक कीमती जन्म विशेष मनुष्य का “नष्ट विशेष” कर रहा है.....! उस एक के सिवा और कुछ है ही नहीं फिर सर्वत्र पूर्ण भरपूर व्याप्त विशेष क्या तेरे से अलग कहीं और कुछ है जो तू किन्हीं तरीकों विशेषों से उसे कहीं और ही ढूँड विशेष रहा है वो तो चतुर “मूर्ख” विद्वान विशेष हर पल तेरे अपने ही संग-तेरे हर प्रत्यक्ष उपलब्ध कण विशेष में भरपूर समाया विशेष हुआ है “निरन्तर!” जैसे फूल और सुगन्ध दोनों एक ही हैं आइने में तेरी परछाई और तुम में क्या फर्क है.....? अर्थात् “पुष्प मध ज्यूं बास बसत है मुकर में जैसे छाई-ऐसे ही हरि बसै निरन्तर-“घट” ही खोजह भाई!” उस एक को अनुभव विशेष करने हेतू तुझे कहीं बाहर जाने की आवश्यकता ही नहीं उसे तो तू अपने ही घट रूपी शरीर विशेष में “निरन्तर” अनुभव विशेष कर बिना किसी भी कठिन-कठिन श्लोकों-मंत्रों अथवा कीमती-कीमती सामग्रियों-आडम्बरों कर्म-काण्ड रूपी क्रियाओं के अभाव विशेष में “केवल” मर्यादित विशेष रह कर

प्रमाणिक तौर पर केवल अपनी ही निजी जिन्दगी विशेष में खुद को लगातार प्रयत्नशील विशेष बनाते हुऐ.....! क्योंकि “पढ़ना-गुणना चातुरी इह तो बात सहल-काम दहन-मन बस करन-गगन चढ़न मुश्किल!” अर्थात संसार में प्रचलित सभी महान-महान प्रवचन-लिखित रूपी कर्म काण्ड विशेष-विशेष सूक्ष्म मन के अंहु विशेष का ही एक आवश्यक अंग विशेष हैं और ये अभ्यास विशेष से प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष हो जाता है इस चतुराई विशेष से बच अर्थात ऊपर उठ यानि के ये सब जानकारी विशेष आवश्यक जरूरत तक “सीमित विशेष” रख कर आगे बढ़ अर्थात वो कार्य विशेष कर जो तेरे और उस एक के मध्य में रुकावट विशेष बना हुआ है यानि के अपने और उस एक के मध्य की इस मजबूत दीवार रूपी काम यानि कामनाओं विशेषों को सीमित विशेष करता हुआ सदा के लिये मिटा दे अर्थात मन को अपने अधीन कर और अपने ही अन्तर में हृदय चक्र विशेष से अपने को निकाल कर ऊपर आज्ञा चक्र विशेष की ओर बढ़ यानि के इस “गगन चढ़” वाले मुश्किल आवश्यक कार्य विशेष को शीघ्र से पूरा विशेष कर ले क्योंकि प्राण शक्ति तो निरन्तर तेरे फिजूल के कार्यों में खर्च विशेष होती हुई “स्वत्म विशेष” होती जा रही है.....! अर्थात फंदा विशेष आवश्यक तेरी गर्दन पर कसता ही विशेष चला जा रहा है और तू है कि नाचने-कूदने इत्यादि “फन विशेषों” में ही उलझा हुआ “निरन्तर” मिटता विशेष ही जा रहा

है.....! इस एक आवश्यक कठिन कार्य विशेष हेतु तुझे निरन्तर अपनी उस एक के प्रति वासनात्मक “सोच व्यवहारिक” को विकसित विशेष करना अर्थात् बनाना विशेष होगा प्रमाणिक तौर पर.....! तू जब मनुष्य जन्म में आधिकारिक रूप से प्रत्यक्ष विशेष हो गया है तो तुझे जन्मते ही अधिकार विशेष प्राप्त हो जाता है “निरन्तर” अपने इस आवश्यक दुर्लभ कार्य विशेष को सम्पन्न विशेष करने का अर्थात् अपने मूल को निरन्तर प्रत्यक्ष अनुभव विशेष करने का यानि के तुझे किसी भी महान-महानतम दल्ले विशेष की इजाजत अथवा मुहर विशेष-विशेष लगवाने की कोई भी आवश्यकता ही नहीं है किसी भी काल में.....! शेष केवल जानकारी विशेष का आधिकारिक विषय विशेष है जो अन्धी पैदा हुई आत्मा विशेष के लिये अवश्य ही लाभदायक विशेष है.....! इसके लिये सन्यास की आवश्यकता नहीं है लेकिन प्रत्येक भोग अथवा विषय विशेष की आधिकारिक “सीमा विशेष” आवश्यक है आवश्यकता अनुसार आवश्यक रूप से “निरन्तर” इसका अवलोकन तथा संयादन विशेष होना अति आवश्यक है प्रत्येक आत्मा के लिये उसकी प्रत्यक्ष उपलब्ध स्थिति विशेष-विशेष के अनुसार आवश्यकता अनुसार आवश्यक भुगतान विशेष-विशेष के पूरी तरह से सम्पन्न विशेष होने हेतु “निरन्तर” सावधानी आवश्यक के तौर पर.....! अर्थात् निजी क्रियात्मक ज़िन्दगी सहित संसार के प्रत्येक आवश्यक अंग विशेष में केवल गुज़ारे मात्र की

प्रविष्टि ही तुझे आगे बढ़ने विशेष चढ़ने में सहायक सिद्ध विशेष होगी केवल पूरी तरह से मर्यादित विशेष रहते हुए निरन्तर.....! शेष जो कुछ भी तेरे पास “एकत्र विशेष” होता है उसका वापस सृष्टि विशेष को लौटाना विशेष तेरे सहित पूरी सृष्टि का कल्याण आवश्यक विशेष है “निरन्तर” उस क्रिया का “चक्र विशेष” की तरह चलना ही आवश्यक “सुरक्षा विशेष” है प्रत्येक जीव की.....! आवश्यकता सन्यास लेकर बन में जाने की नहीं है अब बन में कुछ भी पोषण हेतू अथवा सुरक्षा आवश्यक उपलब्ध ही नहीं है । जैसे पहले ऋषि जन अपनी इच्छा सुविधा अनुसार जल में जल स्तम्भित कर समाधी लगाते थे वैसे ही पृथ्वी पर भी अपने आवश्यक दायरे विशेष को अपनी कमाई विशेष से सुरक्षित विशेष बनाते थे तथा जो भी जीव विशेष उनके इस दायरे विशेष में अपने कार्य विशेष हेतू प्रस्तुत विशेष होते थे उन्हें भी ये आवश्यक दुर्लभ सुरक्षा विशेष उपलब्ध विशेष हो जाती थी अब न तो कमाई वाले तपस्वी हैं और न ही प्रकृति का आवश्यक पोषण स्वास्थ्य रूपी सुरक्षा ही उपलब्ध विशेष है.....! इस कारण पिछले समय में सन्यासी गृहस्थ से भिक्षा पर निर्भर रहने लगे अपने आवश्यक कार्य विशेष हेतू लेकिन फिर इसमें पाखण्ड बढ़ने से भिक्षा का चलन मिटने लगा और असली सन्यासी भूखे-तड़पते मिटने विशेष लगे जिस कारण कुछ कमाई वाली आत्माओं विशेषों ने डेरा-लंगर आदि का प्रचलन विशेष स्थापित किया इस आवश्यक

सन्यास विशेष को सुरक्षित विशेष बनाये रखने हेतू । लेकिन आज उसका बिगड़ा और सबसे कमीना स्वरूप आपके सामने प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है महान-महान डेरे-भण्डारे-स्थान विशेष-विशेष निकृष्ट वासनात्मक डूबने वाले महान-महान कर्म-काण्डों विशेषों के प्रत्यक्ष रूप में यकीनी तौर पर.....! उन सब में आवश्यक दुर्लभ सन्यास विशेष तो कहीं पूरी तरह से डूब ही गया है अर्थात् ऐसा खोया है कि उसकी तलाश तो इस वासनात्मक दौर विशेष में घौर असम्भव विशेष ही है क्योंकि ये दौर विशेष तो मर्यादित कमाई कर प्राप्त करने का नहीं बल्कि “खोसने” विशेष का है फिर त्याग-सन्यास की कौन सी दुर्लभ कल्पना विशेष आप अपने साथ बांधे घूम रहे हैं.....! अगर किसी को अपनी “दुर्लभ वासनायें” तीर्थ-स्नान इत्यादि पूरी करनी हैं तो अपनी “कमाई विशेष” खर्च करे बाहर सब कुछ प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष है न तो तू त्यागी है और न ही सन्यासी फिर कैसी सुविधा विशेष तुझे दी जाये और क्यों दी जाये ! “वो भी मनुष्य जन्म को नष्ट करने हेतू” ? फिर उसे सृष्टि में कहीं भी कुछ भी मुफ्त में उपलब्ध विशेष नहीं होता चारों ओर अच्छी तरह से देख लो.....! पशु -परिन्दा भी यदि किसी की बनायी हुई बावली विशेष से एक बूंद पानी भी आवश्यक लेता है तो उसे भी अपने शुभ कर्मों रूपी आवश्यक भुगतान विशेष को उस बनाने वाले के खाते में ट्रांसफर विशेष करना पड़ता है इसे जल्दी से जान कर गाँठ बाँध ले मूर्ख “चतुर” विद्वान महान आत्मा

विशेष.....! ये सृष्टि का आधारभूतिक विधान विशेष है.....! समाज का रेप विशेष कर कमाये हुऐ साधनों विशेषों से चढ़ाये हुऐ चढ़ावे विशेष द्वारा प्रत्यक्ष हुआ भण्डारा अथवा लाभकारी “भ्रमित” महान से महानतम कार्य विशेष-विशेष-कैसे और किन तरीकों विशेषों से ये महान-महान ब्रह्मज्ञानी-संत महान पातशाह-पैगम्बर विशेष-विशेष कौन सी दृष्टि विशेष मार कर इन सभी निकृष्ट पापों विशेषों को पुण्य विशेष-विशेष महान में बदल विशेष देंगे.....? सृष्टि को तो विधान के रूप में प्रत्येक नैगेटिव सोच व्यवहार का आवश्यक भुगतान विशेष चाहिए अपने बैलंस विशेष के रूप में प्रत्येक काल में “निरन्तर” विधानानुसार.....! अर्थात चढ़ा हुआ पाप केवल पाप विशेष के रूप में ही बढ़ेगा आवश्यक रूप से यानि कि किसी भी अरदास-प्रार्थना अथवा महान-महान दृष्टियों कर्मकाण्डों विशेषों से उसमें कुछ भी आंशिक बदलाव भी होने वाला नहीं है यानि के काटें-अक्क विशेष के बीज कभी भी किसी भी प्रकार अथवा यन्न विशेष-विशेष महान से आम विशेष-विशेष मीठे महान प्रत्यक्ष करने में पूरी तरह से घोर असमर्थ विशेष ही हैं “तकनीकी रूप” से सृष्टि के विधान आवश्यक में निरन्तर “लगातार” प्रत्येक काल में.....! आवश्यकता साक्षरता स्वास्थ्य और रोजंगार विशेष की है आवश्यक पोषण विशेष सुरक्षा हेतू फिर सभी उपलब्ध संसाधन बंजर को हरा विशेष बनाने हेतू क्यों नहीं खर्च विशेष किये जाते.....? इन जनता के “नौकर” महान

राज सत्ता विशेषों द्वारा भूमि और साधनों विशेषों के होते हुए कोई फिर भूखा बेरोज़गार क्यों है और इनके मालिक कुछ विशेष अथवा सरकार विशेष क्यों हैं.....? जब प्रभु ने सबको एक सा बनाया सृष्टि सबको एक सा आवश्यक पोषण विशेष दे रही है फिर ये बीच में दलाल कहाँ से आ गये सृष्टि के संसाधनों पर अपना विशेष एकाधिकार स्थापित विशेष करते हुए.....? अर्थात् प्रत्येक स्वतन्त्रता की आवश्यक “सीमा विशेष” अति आवश्यक विशेष है प्रत्येक काल में “निरन्तर” उपलब्ध स्थिति विशेष को ध्यान में रखते हुए और निरन्तर सभी “एकत्रण विशेष” को वापस सृष्टि में लौटाना अति आवश्यक विशेष है सभी सम्भावित अपवादों विशेषों से पूरी तरह से बचने हेतु “लेकिन ये अवश्य ही निरन्तर ध्यान विशेष रखना चाहिए कि प्रत्येक आवश्यक सुरक्षा विशेष सृष्टि के किसी भी अंग में प्रतिकूल प्रवेश किये बिना ही उपलब्ध विशेष की जाये यकीनी तौर पर” तभी तू अपने को केवल “इन्सान विशेष” कहलाने का हक विशेष रखता है.....!” सभी आवश्यक पोषण अथवा सुरक्षा के संसाधन कुछ मनुष्यों विशेषों के पास एकत्र विशेष हो जाने से आपके इस महान लोकतन्त्र विशेष ने शेष कायनात को भूखा अथवा अभाव में तरस्त तड़पा विशेष रखा है “निरन्तर” और पूरी सृष्टि के विभिन्न आवश्यक अंगों विशेषों का घोर भक्षण विशेष करने से “प्रतिकूल प्रभावित” विशेष हो कर सब कुछ मिटाने के लिये मजबूर विशेष कर दिया

है विधि को विधानानुसार यकीनी तौर पर (मिटने का अर्थ सब कुछ भुला दिया जायेगा ऐसा नहीं है ब्याज सहित सब कुछ भुगतना घोर निश्चित विशेष है.....!).....! जब कोई जीव मनुष्य जन्म में अवतरित होता है तो विधि पहले उसकी सुरक्षापोषण हेतु हजारों लाखों गुना अधिक सृष्टि में प्रत्यक्ष उपलब्ध विशेष करती है और यदि फिर भी कोई जीव अभाव में है तड़प विशेष रहा है आधारभूतिक सुरक्षा आवश्यक हेतु तो उसके जिम्मेदार सभी “चौधरी श्रेणी” के महान-महानतम मनुष्य-ब्राह्म ज्ञानी महान विशेष-विशेष ही हैं प्रत्येक काल में जो अपने आधिकारिक प्रवेश के प्रत्यक्ष उपलब्ध नतीजों विशेषों से किन्हीं भी उपायों या दलीलों विशेषों से बच नहीं सकते किसी भी काल में यकीनी तौर पर.....! जब एक सन्यासी ने राम के हाथों भिक्षा विशेष लेने से इन्कार विशेष कर दिया तब उससे कारण पूछा गया उसने बताया कि हे राम तू ब्रह्म हत्या का दोशी है तेरे हाथ से दान लेकर मैं अपना सन्यासी धर्म विशेष भ्रष्ट नहीं करना चाहता और खाली हाथ लौट गया जब उस समस्या का समाधान पूछा गया तब कुलगुरु ने बताया कि अश्वमेध यज्ञ विशेष ही इस अभाव को दूर करने में समर्थ विशेष है इस कारण भगवान राम का लोक कल्याण हेतु किया गया आवश्यक कर्म विशेष भी अपवाद के रूप में प्रकट हुआ और कल्याण हेतु अश्वमेध यज्ञ विशेष सम्पन्न करना पड़ा विभिन्न कठिनाइयों विशेषों का सामना विशेष करते हुये और आप

कौन से मर्यादापुरुषोत्तम महान विशेष को कि उस रावण का हर बरस पुतला विशेष जला कर अपने को राम का भी बाप विशेष स्थापित कर रहे हो.....! क्या कभी अपने अन्दर झाँक कर देखा है.....? हो तो तुम रावण के भी बाप और बता रहे हो राम के जन्मदाता महान दुर्लभ.....! जब ठीक कार्य के बावजूद राम जी भी फँस विशेष गये तो फिर आप तो महान-महानतम दुर्लभ रेपिस्ट विशेष ही हो प्रमाणिक तौर पर कभी सोचा है कि आप का क्या होगा अर्थात् कहीं तो आपका भी बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार विशेष-विशेष महान हो रहा होगा अवश्य ही वसूली विशेष के हेतू “निरन्तर” प्रमाणिक तौर पर.....! आज की जरूरत गृहस्थ सन्यास अर्थात् अपने को सीमित विशेष रख कर “निरन्तर” मर्यादित विशेष बन कर अपनी जिम्मेदारियों को पूरी ईमानदारी से निभाने विशेष की है “निरन्तर” अपनी आवश्यक मंजिल विशेष को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना है और आँख बन्द विशेष होने से पहले ही अपनी आवश्यक मंजिल विशेष को अवश्य ही प्राप्त विशेष करना है । अब ज़रा अपने अन्दर झाँक और अपने मुँह पर लगाये हुए मसीही मुखौटे विशेष को उतार क्योंकि ये आगे पकड़ा विशेष जाता है और तेरी सम्बन्धित महान-महान रूहों रूपी “सम्बन्धियों विशेषों” को भी कटघरे विशेष में “वसूली” हेतू खड़ा होने को मजबूर विशेष कर देता है “अगे वस्त सिन्जाणिये पितरी चोर

करेई” फिर ये सब धन्धा अर्थात् कर्म काण्ड विशेष-विशेष कथा-
भण्डारे-जलूस-कीर्तन-मुक्ति-प्रार्थना-प्रवचन महान वगैरह-
वगैरह करने-कराने वाले दल्ले विशेष महान-महान कमेटी-पंथ
वगैरह-वगैरह रूपी ब्रह्म ज्ञानी संत-महंत-देव-पातशाह महान-
महान कैसे बच जायेंगे अर्थात् “वडिये हथ दलाल के मुसफी एह
करेई” अर्थात् कहीं पर तो इन महान-महानतनों का भी बड़ी
बेसब्री से इंतजार महान विशेष हो ही रहा होगा इन महान-महान
दलाली की आवश्यक वसूली विशेष हेतु यकीनी तौर पर....! और
अगर तू सच्चा विशेष है तो फिर यहाँ इन महान क्रियाओं विशेषों
में क्या कर रहा है क्योंकि सच्च विशेष तो यह है कि “आशिक
रहन अलग!” अर्थात् सभी व्यवहारों विशेषों से आवश्यकता
अनुसार अपने को सीमित विशेष रखते हुए अपने को इन्द्रियों से
ऊपर उठाना और अपने आधार विशेष को “निरन्तर” प्रत्यक्ष
अनुभव विशेष करते हुए सदा के लिये संतुष्ट-मुक्त विशेष हो
जाना ही प्रत्येक मनुष्य का धर्म विशेष है “केवल जीते जी ही”
.....? “दस इन्द्री कर रखे वास-ताके आत्मा हुआ प्रगास” और यह
कार्य आवश्यक केवल जीते जी स्वयं के मन रूपी अंहम विशेष
को पूरी तरह से मिटा विशेष देने पर ही सम्भव विशेष होता है
अर्थात् इस दुर्लभ आवश्यक यज्ञ विशेष में अपने स्वयं के ही
इन्द्रियों रूपी आवरण यानि शरीर को “होम विशेष” करना पड़ता
है अर्थात् वासनाओं रूपी विभिन्न अनन्त कामनाओं के जाल

विशेष में बन्धी आत्मा ^{६६}अज्ञानता के अंधकार^{७७} में डूबती-गोते लगाती रहती है पर इस सहज सुलभ समर्था विशेष को कभी भी जान प्रत्यक्ष अनुभव विशेष नहीं कर पाती.....! लेकिन जो भी आत्मा विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहती है वो अवश्य ही ऊपर खींच विशेष ली जाती है प्रमाणिक तौर पर.....! ऐसा कोई एक-आध ही है जो इह तन देवे फूंक लेकिन अंधे लोग इसे भी नहीं पहचान पाते.....! जीते जी तो उस आधे के नीचे भट्टी महान विशेष-विशेष जलाये रखते हैं और फिर बाद में चले जाने के बाद लकीर पीटते हुऐ धर्म-मत-पंथ महान विशेष-विशेष चलाते हुऐ केवल नक़्को घौर भयानक विशेषों को ही और बड़ा महान विशेष करने में ही निरन्तर घौर संलग्न विशेष रहते हैं.....!